ॐ

मेवाड़ दिग्दर्शन

प्रकाशक—

श्री वर्द्धमान-ज्ञान-म...
उदयपुर (मे...

॥ श्रीः ॥

मेवाड़ दिग्दर्शन

लेखक—

बलवन्तसिंह महता

भूतपूर्व सम्पादक 'यात्री-मित्र' कलकत्ता,
हैडमास्टर—जैन स्कूल, उदयपुर.

प्रकाशक
श्री वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर
उदयपुर मेवाड़

कुँ० हमीरमल लूणियां के प्रबन्ध से दि डायमण्ड
जुबिली प्रेस, अजमेर में छपा.

प्रतापजयन्ती | सम्वत् १९८९ वि० | मूल्य ।) चारआने
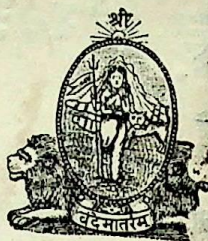
मेवा
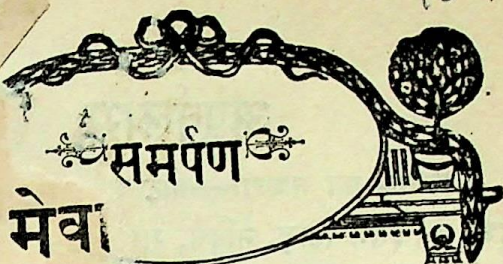
राम के वंशधर,

विद्यानुरागी, प्रजारञ्जक.

भूतपूर्व स ा-कमल-दिवाकर

हैंड ावाड़ाधिपति

ामान् महाराणा-साहब

ालसिंहजी बहादुर

जी० सी० एस० आई०

कुं० के

कर-कमलों में सादर सभक्ति

प्रता समर्पित

अपूर्वलाभ

मेवाड़ का नक्शा—मोटे कागज़ पर सुन्दर छपा हुआ है। इसमें पहाड़, नदियें, रास्ते, रेलें, सड़कें, गाँव, कस्बे आदि बतलाये गये हैं। आकार २६"×२२" है। मूल्य ≡) केवल। इसी आकार का जिलेवार रंगीन सुन्दर नकशे की कीमत ।।)। कपड़ा तथा डंडे लगे हुए की कीमत १)

माप विद्या प्रदर्शिनी—पैमाइश (survey) के काम सीखने वालों के लिये सर्व श्रेष्ठ पुस्तक है। अनेक पत्र पत्रिकाओं ने बहुत प्रशंसा की है। अनेक चित्रों तथा नकशों द्वारा सरल रीति से समझाया गया है। किमत ।।।)

दो सौ वर्ष की जन्त्री—इस जन्त्री से दो सौ वर्ष की तिथि, वार निकाला जासकता है इसमें ऐसी तरकीब भी दी हुई हैं कि आप स्वयं कई सौ वर्षों की जंत्री बना सकते हैं। मूल्य केवल -) एक आना

मेवाड़ दिग्दर्शन दूसरा भाग—(मेवाड़ राज्य का बृहद् इतिहास) शीघ्रही छपेगा। यह मेवाड़ राज्य के गज़ैटियर के रुप में रहेगा। मेवाड़ सम्बन्धी जानने योग्य बातें एवं विषयों का समावेश रहेगा।

मिलने का पताः—

श्री वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर.

विषय-सूची

मेवाड़ दिग्दर्शन

देश परिचय और स्थान—यदि हम हिन्दुस्थान का नकशा लें तो इसके पश्चिम में पतंग के समान हम एक बहुत बड़ा प्रांत पीले रंग का देखते हैं। यह राजपूताना कहलाता है क्योंकि इसमें बहुत से राजपूत राजा राज्य करते हैं। इसके मध्य में अरावली पर्वतमाला जो उत्तर से दाक्षिण को गई है, इस प्रान्त को दो भागों में बांटती है:-(१) पश्चिमीय राजपूताना और (२) पूर्वी राजपूताना।

पूर्वी राजपूताने के दक्षिण के पठार में जो प्रदेश है वह 'मेवाड़' कहलाता है, इसको संस्कृत भाषा में 'मेदपाट' कहते हैं यह देश हिन्दुस्थान में अन्य तीन नामों से भी प्रसिद्ध है:—(१) यहां प्रातःस्मरणीय भगवद्भक्त मीरांबाई नामक महाराणी हुई हैं उनके नाम से वह मीरांबाई का देश तथा (२) संसार के अद्वितीय वीर एवं धर्मरक्षक महाराणा प्रताप के इस देश में होने के कारण यह प्रताप के देश के नाम से भी विख्यात है। (३) इस समय राज्य

की राजधानी उदयपुर होने से यह उदयपुर राज्य भी कहलाता है।

सीमा—राज्य के उत्तर में अजमेर और उत्तर-पूर्व में देवली के पास जयपुर का राज्य है। पूर्व में बूंदी, कोटा, हुल्कर और ग्वालियर के इलाके हैं। दक्षिण में डूंगरपुर, प्रतापगढ और बांसवाड़े की रियासतें हैं। दक्षिण-पश्चिम में ईडर व पश्चिम में सिरोही, जोधपुर और मेरवाड़े के इलाके हैं। मेवाड़ राज्य के कई गांव ग्वालियर, ईडर, जोधपुर, टोंक आदि राज्यों में भी हैं।

राज्य-विस्तार—यह देश राजपूताने के ठेठ दक्षिण में प्रायः १२६९१ वर्गमील में फैला हुआ है।

इस समय राज्य की सब से अधिक लंबाई पूर्व से पश्चिम तक करीब १६३ मील और सब से अधिक चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक प्रायः १४४ मील है।

इसका उत्तरी अक्षांश २३·४९' से २५·५८' तक तथा पूर्वी देशांतर ७३·१' से ७५·४९' तक है।

प्राकृतिक भाग—इस राज्य के दस भाग ऐसे हैं जहां के कुदरती हालात एक दूसरे से कुछ भिन्न हैं। वे ये हैं:—(१) मेवाड़ (२) खेराड़ (३) ऊपरमाल (४)

(१) राज्य का समथल खुला हुआ भाग मेवाड़ कहलाता है।

(२) जहाजपुर और मांडलगढ के जिले 'खेराड़' में गिने जाते हैं।

भीतरी-गिरवा (५) मगरा (६) भोमट (७) सेरानला (८) सियालपट्टी (९) मदारिया (१०) मेवाड़-मेरवाड़ा।

(३) बिजौलियां खास तथा आसपास की भूमि जो कुछ ऊंची है 'ऊपरमाल' कहलाती है। जहाजपुर से ही पहाड़ियों की श्रेणी विस्तृत और ऊंची होती चली गई है और मांडलगढ से आगे जाकर उसके ऊपर समान भूमि आगई है, जिससे इसको 'ऊपरमाल' कहते हैं।

(४) राजधानी उदयपुर के चारों ओर पर्वत श्रेणी से घिरा हुआ प्रदेश 'भीतरी-गिरवा' कहलाता है। यह अण्डाकृति शक्ल में है, जिसकी लंबाई दक्षिण से उत्तर तक १४ मील और पूर्व से पश्चिम तक करीब ११ मील है। इसके पहाड़ ८ से १२ सौ फीट के ऊंचे हैं। इस प्रकार यह प्रदेश चारों ओर से सुरक्षित है। इसके दो दर्रे हैं:—उत्तर में चीरवा का घाटा पूर्व में 'देवारी'। दोनों घाटियों में दरवाजे बने हुए हैं।

(५) राज्य का दक्षिणी भाग जिसमें पहाड़ और पहाडियां बहुत हैं, 'मगरा' कहलाता है। मेवाड़ी भाषा में पहाड़ को मगरा कहते है।

(६) राज्य का दक्षिणी-पश्चिमी भाग अर्बली पर्वतमाला के घोर जंगलों से मिला हुआ है। यहां भूमट्ट-भोमियों के बहुत होने के कारण यह 'भोमट' कहलाता है। अंग्रेज लोग इसको Hilly tracts of Mewar 'हिली ट्रेक्टस् ऑफ मेवाड़' कहते हैं।

(७) कुम्भलगढ जिले का अधिकांश 'सेरानला' में गिना जाता है। जरगा पहाड़ के उत्तर में 'नला' तथा दक्षिण में 'सेरा' कहा जाता है।

(८) सेरेनले से मिला हुआ जरगा का पूर्वी भाग तथा खमणोर जिले का पश्चिमी भाग 'सीयालपट्टी' में शुमार किया जाता हैं।

(९) मदारिया नामक प्राचीन कस्बे के नाम से देवगढ तथा आस पास का प्रदेश 'मदारिया' कहलाता है

(१०) मेरवाड़े में मेवाड़ राज्य के कतिपय गांव हैं।

राज्य के दो मुख्य प्राकृतिक विभाग

यदि हम मेवाड़ राज्य के नक़शे को देखें तो हमें बीच में खुला हुआ चौरस मैदान और उत्तर के हिस्से को छोड़ चारों ओर ऊंची जमीन तथा पहाड़ और पहाड़ियां ही दिखलाई देंगी। राज्य का करीब दो तिहाई हिस्सा खुला हुआ चौरस मैदान तथा एक तिहाई हिस्सा पहाड़ी तथा चट्टानी है। इसलिये इन्हीं दो बड़े हिस्सों को लेकर समझने का प्रयत्न करेंगे। (१) पहाड़ी भाग (२) खुला हुआ समथल मैदान।

पहाड़ी भाग—राज्य के पच्छिम में अर्बली पर्वतमाला प्रायः दो हजार फीट की ऊंचाई से घुसती है। यह यहां से धीरे २ ऊंचाई में बढती हुई कुम्भलगढ के पास करीब साढ़े तीन हजार फीट तथा इसके कुछ दच्चिण में साढ़े चार हजार फीट के करीब ऊंची होगई है। वह प्रसिद्ध 'जरगा' पहाड़ की चोटी है। सारे राज्य में यही सब से ज्यादा ऊंचाई में है। यहां से फिर यह पर्वतमाला ऊंचाई में घटती हुई तथा राज्य की पश्चिमी सीमा पर कोट बनाती हुई दच्चिण की ओर राज्य की सीमा के बाहर चली गई है।

राज्य के पश्चिम में निम्न पहाड़ प्रसिद्ध हैं:—

सांडमाता का पहाड़—यह पहाड़ देवगढ़ से ईशान कोण में है। पहाड़ पर आँजणा माता का मन्दिर है। यह पहाड़ ३०६२ फीट ऊंचा है।

कुम्भलगढ़ का पहाड़—यह पहाड़ समुद्र सतह से ३५६८ फीट ऊंचा है। इस पर सुदृढ़ एवं सुन्दर किला बना हुआ है। इसका वर्णन आगे दिया गया है।

परशुरामजी का पहाड़—यह पहाड़ किले से दो मील पश्चिम-दक्षिण में, उदावड़ गांव से कुछ आगे है। इसकी ऊंचाई ३९५५ फीट है। पहाड़ की गुफा में महादेवजी का मन्दिर है। यहां का दृश्य बहुत ही सुन्दर है। कई यात्री दर्शनार्थ आते हैं।

जरगा का पहाड़—सायरे से पूर्व की ओर करीब ८ मील की दूरी पर पलासमा गांव से कुछ आगे तथा गोगुन्दे से १५ मील उत्तर में यह पहाड़ है। मेवाड़ में यह सब से ऊंचा पहाड़ है, इसकी ऊंचाई ४३१५ फीट है। इस पर रामदेवजी का मन्दिर है। फाल्गुन कृष्णा १४ को मेला लगता है। हजारों आदमी इकट्ठे होते हैं।

मछावले का मगरा—सायरे जिले में मचींद के पास है। इस पर भी जल और हरियाली की बहुतायत है।

मारवाड़ राज्य में जाने के लिये इन पहाड़ों में कई दर्रे-नाले हैं। इनमें खास ये हैं:—

झीलवाड़े की नाल—इसको पगल्या की नाल भी कहते हैं। यह करीब ९ मील लम्बी तथा बहुत सकड़ी है। यह देसूरी को जाती है।

सोमेश्वर की नाल— यह बहुत विकट और लम्बी है।

हाथी गुडा की नाल—यह नाल केलवाड़े के पास से शुरू होती है। कुम्भलगढ़ का किला इस नाल के ठीक ऊपर है। इसके मुंह पर मोरचेबन्द फाटक है जहां मेवाड़ के सिपाहियों का पहरा रहता है। यह घाणेराव जाती है।

राज्य का दक्षिण-पश्चिमी भाग घोर जङ्गल प्रदेश है। यह अर्वली पहाड़ के घने जङ्गलों से मिला हुआ है इसके बीच में जगह २ खेती के योग्य भूमि है यह भाग भोमट का है। इसका ढ़ाल दक्षिण की ओर है। इसमें पहाड़ कहीं २ साढ़े तीन हजार फीट उंचे हैं। इस भाग में आहोर का पहाड़ प्रसिद्ध है। इस पर कमलनाथ महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर होने से इसे कमलनाथ का पहाड़ भी कहते हैं। स्थान सुन्दर है। इस पर प्राचीन समय का गढ़ व महल बने हुए हैं। वीरता के देवता महाराणा प्रताप युद्ध काल में बहुत समय तक यहां रहे थे।

यहीं से एक शाखा पूर्व को गई है जो राज्य के कुल दक्षिणी भाग को घेरे हुए है। इसमें अधिकांश भाग मगरे ज़िले का है। यह भाग कुल पहाड़ी देश है जो बीच २ में छोटी २ तङ्ग घाटियों के आजाने से पर्वत श्रेणियों से अलहदा हो गया है। इसमें धोला मगरा का पहाड़ प्रसिद्ध है।

राज्य के ईशान कोण में दूसरी पर्वत श्रेणी देवली के पास से शुरू होकर भीलवाड़े तक चली गई है। इसमें चँवलेश्वर का पहाड़ प्रसिद्ध है। इस पर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ का मन्दिर है। कई लोग दर्शन करने को जाते हैं।

तीसरी श्रेणी देवली के पास से निकल कर राज्य के पूर्वी हिस्से में जहाजपुर, मांडलगढ़, मैनाल होती हुई चित्तौड़-गढ़ के दक्षिण-पूर्व में कणेरा तक चली गई है। इस श्रेणी की ऊंचाई दो हजार फीट से अधिक नहीं है। इस श्रेणी में चित्तौड़गढ़ का पहाड़ और अरड़ावनिया मगरा जिसकी श्रेणियां बस्सी से कणेरे तक चली गई हैं विशेष प्रसिद्ध हैं।

मांडलगढ़ से इसी का एक सिलसिला बिजोल्या भैंस-रोड़गढ़ होता हुआ कोटा राज्य की ओर चला गया है। इसमें उपरमाल का पहाड़ प्रसिद्ध है। यह पहाड़ फलदार वृक्षों से शौभायमान है तथा चित्तौड़गढ़ के समान सजल है। इस पर योगिनी माता व शिवजी के उत्तम स्थान हैं। यह पहाड़ बेगुं से तीन कोस ईशान कोण में है।

एक छोटी सी श्रेणी बड़ी साद्दड़ी से जाकम नदी तक चली गई है।

राज्य में जङ्गलों का क्षेत्रफल करीब ४६६० वर्ग मील है, जो राज्य के करीब तिहाव से कुछ ज्यादा है। जो जङ्गल राज्य की निगरानी में हैं वे करीब ६० वर्ग मील में हैं।

पहाड़ों से जो लाभ हैं वे सब इस पहाड़ी हिस्से में पाये जाते हैं।

(१) वर्षा विशेष होती हैं। (२)वर्षा बहुत होने से नदियां निकलती हैं जिनसे देश की सिंचाई होती है तथा कुओं में सेजा रहता है (३) पहाड़ों से ईंधन, कीमती लकड़ी और जड़ी बूटियां आदि मिलती हैं। (४) पास के रेगिस्तान की गर्म हवाओं (लू) को रोकते हैं। (५) पहाड़ों के लोग निडर और बहादुर होते हैं। (६) पहाड़ हमारे देश को शत्रुओं के हमलों से बचाते हैं। (७) पहाड़ों में खानियां बहुत होती हैं। (८) बरसात के दिनों में यह पहाड़ी हिस्सा बड़ा ही सुन्दर और भला जान पड़ता है और वहां रहने को जी चाहता है। चारों तरफ हरी मखमल का बिछौना सा बिछा हुआ दिखाई देता है।

जंगलों की छटा मन को बहुत ही खुश कर देती है। कहीं २ घोर जंगल होने के कारण डरावना सा मालूम

होता है किन्तु ऐसे स्थान बहुत से हैं जो बहुत ही सुन्दर और शान्त दीख पड़ते हैं जैसे पुराने समय के ऋषि मुनियों के आश्रम हों।

कुदरत की कारीगरी के सुन्दर नमूने राज्य के इसी हिस्से में पाये जाते हैं। उदयपुर, जयसमुद्र, कुंभलगढ़, एकलिंगजी आदि कई एक स्थान ऐसे हैं कि जिनकी सुन्दरता देखते ही बनती है।

राज्य का यह पहाड़ी हिस्सा सीमा पर होने के कारण इसमें जहां तहां कई गढ़ व किले बने हुए हैं जिनसे देश की शोभा और सुदृढ़ता और भी बढ़ गई है।

पहाड़ी होने के कारण भारतवर्ष की पुरानी कारीगरी के बढ़िया नमूने इस देश में पाये जाते हैं जैसेः—मैनाल, बाड़ोली, ऋषभदेवजी, जावर, नागदा, एकलिंगजी आदि के पुराने और सुन्दर मन्दिर तथा कुम्भलगढ़, चित्तौड़गढ़, भैंसरोड आदि के किले इसी भाग में हैं। इनकी कारीगरी और बनावट के बारे में आगे लिखा हुआ है।

टॉड साहब जो पुरानी बातों की खोज में बहुत ही जानकार थे लिखते हैं कि मेवाड़ में ऐसी२ सुन्दर और बड़ी इमारतें हैं जिनके बनवाने में पश्चिम की सब से प्रबल बादशाहतें भी अपना गौरव समझती हैं।

मेवाड़ के मशहूर तीर्थ स्थान भी इसी भाग में हैं। इनमें कुछ तो ऐसे हैं जिनकी गणना भारत के मुख्य तीर्थों में हैं जैसे:—श्रीनाथजी, ऋषभदेवजी, चारभुजाजी, द्वाराकाधीश और एकलिंगजी।

पानी चट्टानों तथा पहाडियों से बट जाने के कारण समथल भाग की तरह इस भाग में बड़ी नदियां नहीं हैं जो हैं वे तेज बहने के कारण सिंचाई व सेजे के लिये फायदेमन्द नहीं हैं।

इस भाग में पहाड़ों के बीच की भूमि में खेती होती है।

खुला हुआ समथल भाग—राज्य का उत्तरी और पूर्वी भाग तरेटी का खुला हुआ प्रदेश है। इसका ढाल उत्तर पूर्व के कोण की ओर है। यह भाग 'मेवाड़' के नाम से बहुत कर पुकारा जाता है। यह कहीं ऊंचा और कहीं नीचा है।

यद्यपि यह भाग बहुत करके खुला हुआ और चौरस मैदान है किन्तु कहीं २ छोटी २ पर्वत श्रेणियां तथा वीरान मैदान भी पाये जाते हैं। समथल भाग में 'भरक का पहाड़' मशहूर है। भरक के पहाड़ पर देवीका मन्दिर है जहां वैशाख शुक्ला ८ मी को मेला लगता है। राज्य की बड़ी२ नदियां इसी प्रदेश में बहती हैं।

यह भाग सजल और समथल होने के कारण राजपूताने के अच्छे उपजाऊ प्रदेशों में से है। यहां सब और

हरेभरे अनाज और वण के खेत ही बहुत करके दिखलाई पड़ते हैं जिनको देखकर चित्त प्रफुल्लित हो जाता है।

चौरस उपजाऊ भूमि और पानी की बहुतायत होने के कारण इस प्रदेश में बस्ती भी घनी है।

व्यापार के लिये कठिनाई न होने के कारण इस हिस्से में बड़े बडे गांव व कस्बे पाये जाते हैं। इसलिये यहां के लोग पढ़ने लिखने में, कारीगरी में और रहन सहन में पहाड़ी हिस्से के रहने वालों से बढ़े चढ़े हैं और दूसरे बड़े देशों के रहने वालों की तरह उन्नत हैं।

❀ जंगलों की वनस्पति ❀

आम, इमली, बड़, ढाक, गूलर, जामून, खैर *, खजूर, सीसम, खेजड़ा, महुआ, बंबूल, नीम, पीपल, रूंजडा–ये मेवाड़ में प्रायः बहुतायत से पाये जाते हैं। घामण (फालसा) धौ, टीम्बरू (आबनूस) हल्दू, हिंगोटा, कचनार, कालियासिरस, सालर, मोरवा, सेमल, गुगल, आँवला, चंदन, बहेड़ा, सागवान, बाँस ये कहीं कहीं तो बहुतायत और कहीं २ बिल्कुल नहीं और कहीं कमी के साथ मिलते हैं।

---

* खैर से कत्था निकाला जाता है।

बानसी और धरियावद के जंगलों में इमारती काम की सागवान आदि की कीमती लकड़ी बहुतायत से मिलती है। गूंद, लाख, महुआ और बहेड़ा भी कहीं २ बहुतायत से मिलता है।

मेवाड़ में सब जगह आम बहुतायत से होता है।

जंगलों में शहद, मूसली, शिलाजीत, वंशलोचन, शतावरी आदि कीमती चीजें भी इकट्ठी की जाती हैं। चित्तौड़ की मेंहदी प्रसिद्ध है।

खानें।

मेवाड़ राज्य खानों से निकलने वाली कीमती चीजों के विचार से राजपूताने में सब से धनी है। राज्य में चांदी, तांबा, लोहा, सीसा, जस्ता, अभ्रक, सुरमा, ताम्बड़ा तथा बहुत प्रकार के पत्थरों की कई एक खानें हैं। खानों पर अधिकार श्रीजी हजूर महाराणा साहब का है।

चांदी—उदयपुर से १६ मील की दूरी पर मगरे जिले के जावर गांव में चांदी की खानें हैं।

तांबा—राज्य में कई जगह इसकी खानें हैं। सलूम्बर के पास बोरज और आंजणी और गंगापुर के पास रेवाड़ा की खानें प्रसिद्ध हैं।

लोहा—राज्य में लोहा पहले बहुत स्थानों से निकाला जाता था। बीगोद गंगराड़ गुहली, (मांडलगढ़ जिले में) मनोहरपुर (जहाजपुर जिले में) और तेल के पारसोला की खानें प्रसिद्ध हैं। बीगोद का लोहा सब से अच्छा माना जाता है।

सीसा—जावर, दरीबा, बेढुंबी और पोटला की खानों से निकाला जाता था।

अभ्रक—जिसको भोडल कहते हैं, मेवाड़ में कई जगह मिलता है किन्तु इसकी प्रसिद्ध खानें रासमी, सहाड़ा तथा भीलवाड़े जिले में हैं।

सुरमा—यह राज्य की पश्चिमी सीमा पर मिलता है।

तामड़ा—यह एक प्रकार की हलकी जात की रक्त-मणि होती है, भीलवाड़े जिले में मिलती है।

नीलमणि, स्फटिक, लहसनिया और हल्के जात के पन्ने भी राज्य में कहीं २ मिल आते हैं।

राज्य के प्रत्येक जिले में प्रायः पत्थरों की खानें हैं पर बहुत अच्छी जाति के पत्थर निम्न स्थानों में मिलते हैं:—

संगमरमर—यह राजनगर की खानों से निकलता है। यह मकराणे पत्थर से हल्का होता है। इसकी बड़ी २ शिलाएँ निकलती हैं जो इमारतों के काम में आती हैं।

उदयपुर के राजमहल तथा बहुत से मन्दिर इन्हीं पत्थरों से बने हुए हैं। पत्थर कड़ा होने से पोलिश अच्छी आती है। इसके छोटे २ टुकड़े भी आरास-कलई का चूना बनाने के काम में आते हैं।

काला संगमरमर—चित्तौड़ के आस पास मादलदेह और सेंती आदि गांवों से निकलता है इस पर अच्छी घुटाई होने से बड़ा सुन्दर मालूम होता है। फर्श की जड़ाई में बहुत कर के काम में आता है। यह बाहर भी जाता है।

परेवा पत्थर—धूलेव (ऋषभदेवजी) के पास बढ़िया हरे रंग का परेवा पत्थर मिलता है। यह मुलायम होता है। इसके वर्तन बनते हैं तथा खुदाई के लिये याने कोरणी के काम के लिए यह पत्थर अच्छा होता है।

चक्की का पत्थर—यह ढींकली व खमणोर के पास से निकलता है।

आसमानी पत्थर—उदयपुर के पास की खानों से बढ़िया आसमानी रंग की मजबूत इमारती पट्टियां निकलती हैं।

लाल पत्थर—देबारी, जयसमुद्र, सरदारगढ़ के पास आगरिया, मुवाणा (सराड़ा जिला) और चित्तौड़ के पास मादलदेह की खानों से लाल रंग की पट्टियां निकलती हैं।

औजार सुधारने की सिल्लियां—सुथारों के औजार तेज करने की सिल्लियां मांडलगढ़ के पास आमली नामक गांव से तथा नाइयों के पास जो उस्तरे सुधारने की सिल्लियां होती हैं वे थलकाछोला के पास सरथला और चारभुजाजी के पास की खानों से निकलती हैं।

खड़िया मिट्टी—मगरोप की खानियों से निकलती है। पाणभक-मांडलगढ़ जिले में ककरोलिया गांव से निकलता है। यह विदेशों को भेजा जाता है। कई काम में आता है।

नदियां

यदि छोटी सादड़ी से उदयपुर और वहां से गोगुन्दे के पठार में होकर बनास के निकास के पास कुम्भलगढ़ तक इन सब स्थानों को एक लाइन में जोड़ दिया जाय तो यह रेखा मेवाड़ राज्य तथा भारतवर्ष की जलविभाजक रेखा हो जायगी। इस रेखा के उत्तर का कुल पानी बंगाल की खाडी में तथा इसके दक्षिण का अरबी समुद्र में जाता है।

राज्य की कुल नदियां तीन भागों में बटती हैं:—

(१) बनास और उसकी सहायक। बनास राज्य के बाहर चम्बल में जा मिलती है, जो जमुना की सहायक है।

(२) साबरमती और उसकी सहायक।

(३) सोम और उसकी सहायक। सोम डूंगरपुर राज्य में माही से जा मिलती है जो अरबी समुद्र में जा गिरती है।

नदियों

राज्य में छोटी मोटी कई

नम्बर	नाम नदी	निकास	किनारे के मुख्य २ गांव और कस्बे	राज्य में बहाव
१	बनास ...	कुम्भलगढ से तीन मील की दूरी के पहाड़ से	खमणौर, नाथ-द्वारा, कोठारिया, कुरज, मातृकुण्डियां, पहुंना, मगरोप, आकोला, बीगोद, जामोली	१८० मील
२	कोठारी ...	दिवेर की पूर्वी पहाड़ियों से	बागोर, मेजा, सांगानेर, आकाला, कोदूकोटा नन्दराय	६० मील
३	खारी ...	दिवेर के पास की पहाड़ियों से	देवगढ दांतड़ा, आसींद शम्भूगढ, संग्रामगढ, हुर्डा,	५० मील
४	मानसी ...	करेड़ा के उत्तरी पहाड़ों से	आगूंचा, रुपाहेली	४० मील
५	चन्द्र भागा	आमेट के पश्चिम से	आमेट सरदारगढ, पोटला	३५ मील

की सूची

नदियां हैं, उनमें मुख्य ये हैं:—

सहायक नदियों के नाम	विशेष
खारी, कोठारी, बेड़च, चन्द्रभागा आदि मुख्य नदियां इस में आ मिलती हैं।	मांडलगढ से कुछ दूरी पर बेड़च और मेनाली इसमें आ मिली हैं। इससे वह स्थान 'त्रिवेणी' कहलाता है, यह नदी राज्य के समथल भाग में बहने के कारण सींचाई के लिये बहुत लाभ की है, इसमें गर्मी के दिनों में भी कहीं २ पानी रहता है। मेनाली मेनाल से निकली है।
	नन्दराय से कुछ दूर आगे बनास में जा मिली है : सींचाई के लिये यह उपयोगी है, क्योंकि चौरस मैदान में बहती है।
	देवली से कुछ दूर पर नेगाड़िया के पास बनास में जा मिली है। यह उत्तर में राज्य की सीमा बनाती है।
	भैंरू खेड़ा के पास बहती हुई राज्य के बाहर खारी में जा मिली है।
	गलूंड से कुछ दूर उत्तर में बनास में मिल जाती है।

नम्बर	नाम नदी	निकास	किनारे के मुख्य २ गांव और कस्बे	राज्य में बहाव
६	बेड़च······	गोगुन्दे के पूर्वी पहाड़ों से	आहाड़, उंठाला, आंकोला, नगरी	१३० मील
७	चम्बल ...	मध्य भारत में मऊ की छावनी के पास से	भैंसरोड़गढ़ ...	३० मील
८	गौमती ···	सेवंत्री के पहाड़ों से	...	२५ मील
९	सई ······	वीकरण ...	तेजा का वास	४० मील
१०	साबरमती	मेरपुर के पाससे	त्रिकरणी खजुरिया	३० मील

सहायक नदियों के नाम	विशेष
(१) गम्भीरी-यह नदी जावद के पूर्वी पहाड़ों के पास से निकलकर चित्तौड़ के पास बेड़च में आ मिली है। (२) बागन-यह बोहेड़ा और बड़ी सादड़ी के पास से निकलती है। (३) वांकली-भींडर के उत्तर से निकलकर सुरपुरा के पास बहती है।	बेड़च आहाड़ के पास उदयसागर में जा मिली है, यहां से यह फिर नाले के रूप में निकलती है, चित्तौड़ के पास बहती हुई मांडलगढ़ के पश्चिम में कुछ दूरी पर बनास में जा मिली है, इसके तीन नाम हैं:—अहाड़ के पास बहने के कारण आहाड़ की नदी, फिर उदयसागर से नाले के रूप में निकलने के कारण उदयसागर के नाले के नाम से तथा चित्तौड़ और उसके आगे बेड़च के नाम से पुकारी जाती है।
ब्राह्मणी-यह नदी बेगूं के पास से निकलती है।	यह नदी चौरासगढ़ के पास राज्य में घुसती है। भैंसरोड़गढ़ से तीन मील पर चुलिया नामक झरना देखने योग्य है, यहां नदी ६० फीट की ऊँचाई से गिरती है।
......	यह राजसमुद्र में गिरती हैं।
......	यह भोमट के पश्चिम में है। साबरमती में जा मिली है।
......	अहमदाबाद के पास बहती हुई समुद्र में गिरती है।

नम्बर	नाम नदी	निकास	किनारे के मुख्य २ गांव और कस्बे	राज्य में बहाव
११	वाकल ...	गोगुन्दे की पश्चिमी पहाड़ियों से	राघोगढ़, ओगणा मानपुर, कोटडे की छावनी	४५ मील
१२	सोम ...	सोम गांव से	बावलवारा, जवास	३० मील
१३	जाकम ...	छोटी सादड़ी के पास से	......	३० मील
१४	दूसरी गोमती	बानसी के पहाड़ों से	......	......
१५	जामरी ...	जामर कोटड़ा	......	......

सहायक नदियों के नाम	विशेष
......	सावरमती में जा मिली है, यह नदी घने बन और चट्टानी किनारों में बहती है, तथा बहुत तेज है।
कुब्रल, गोमती, सारणी, बेडास, चमला	यह सीमा बनाती हुई डूंगरपुर राज्य में जा निकली है। यह राज्य की संपूर्ण दक्षिणी धरती का जल लेती है।
करमोई, सुखली	छोटी सादडी से निकल कर प्रतापगढ़ इलाके में होकर फिर से मेवाड़ राज्य में घुसकर धरियावाद के पास सोम में जा मिलती है, यह वाकल की भांति बहुत करके जंगल प्रदेश में बहती है इसके किनारे कहीं २ बहुत ही सुन्दर स्थान देखने को मिलते हैं।
(१) गोडी–बाठरडा और कुरावड के पास बहती है (२) मकेरी, खेरोदा के पास से निकलकर उतरडा के पास जामरी में मिली है।	जयसमुद्र में गिरती है, फिर नाले के रूप में निकल कर सोम में जा मिलती है।
......	यह जयसमुद में गिरती है।

झीलें तथा तालाब ।

राज्य में कई झीलें तथा सैंकड़ों तालाब और पोखर आदि जलाशय होने के कारण राजपूताने में मेवाड़ बहुत ही सुन्दर सजल और हरा भरा देश है। झीलों में दो तो इतनी बड़ी और सुन्दर हैं कि वे भारत ही में नहीं किन्तु सारे संसार में प्रसिद्ध हैं। सारे राज्य में एकलाख के करीब कुंए और सैंकड़ों ऐसे तालाब है जिनसे सिंचाई अच्छी तरह की जा सकती है। मुख्य झीलें और तालाब ये हैं:—

(१) जयसमुद्र (२) राजसमुद्र (३) उदयसागर (४) पिछौला (५) फतहसागर (६) बड़ी का तालाब (७) मदार का तालाब (८) घासा का तालाब (९) कपासन का तालाब (१०) करेड़ा का तालाब (११) डिन्डोली का तालाब (१२) लाखोला का तालाब (१३) नगावली का तालाब (१४) मांडल का तालाब (१५) भीलवाड़े का तालाब (१६) गोवटे का तालाब (१७) आगूंचा का तालाब (१८) गागेरी का तालाब।

ऊपर लिखे हुए सबही तालाब व झीलें देखने योग्य हैं किन्तु जो बहुत ही सुन्दर हैं, उनका वर्णन यहां किया जाता है:—

जयसमुद्र—इसको ढेबर झील भी कहते हैं। इस झील का बांध महाराना जयसिंहजी ने बंधवाया था इससे इसका नाम जयसमुद्र पड़ा। यह उदयपुर से ३२ मील दक्षिण-पूर्व में है और वहां तक पक्की सड़क बनी हुई है।

यह संसार की बनवाई हुई झीलों में सें सब सें बड़ी है। यह २१ वर्गमील में फैली हुई है। इसके भर जाने पर इसकी सब से अधिक लम्बाई ६ मील से कुछ ऊपर तथा चौड़ाई ६ मील से कुछ ऊपर हो जाती है। इस में करीब ६६० वर्ग मील भूमि का जल आता है। इसके चारों ओर का घेराव (परिधि) ८६ मील का है। इसमें तीन बड़े २ टापू हैं, इनमें दो टापुओं को बाबा के मगरे और तीसरे को पाइरी कहते हैं। इनका बांध दो पहाड़ों के बीच संगमरमर का बना हुआ है। यह बांध बहुत मजबूत है। यह बांध १००० फुट लम्बा और ९५ फुट ऊंचा है इसके पीछे उतना ही ऊंचा दूसरा बांध बांधा गया है। बांध के ऊपर छत्रियां तथा महल बने हुये हैं। बांध के बीच में एक मन्दिर बना हुआ है।जिसमें सुन्दर कारीगरी का काम है। झील के आस पास का पहाड़ी प्रदेश घने पेड़ों और जंगलों से ढका हुआ है इसमें जंगली जानवर नाहर, चीते आदि पाये जाते हैं।

यह प्रदेश देखने वालों को बड़ा ही सुन्दर मालूम

होता है। जगह २ आखेट के लिये मूठें बनी हुई हैं जिनसे सुन्दरता और बढ गई है। इसको देखने के लिये हरसाल भारतीय और अंगरेज आदि कई दर्शक आते हैं और देख कर चकित हो जाते हैं।

राजसमुद्र—यह झील उदयपुर से ४० मील उत्तर में है। इसकी लम्बाई ४ मील और चौड़ाई १॥ मील है। १९५ वर्गमील की भूमि का जल इसमें आता है। इसको महाराणा राजसिंहजी ने सन् १६६२ के घोर अकाल में अकाल पीडितों की सहायता के लिए बनवाना आरम्भ किया था। इसके बनने में करीब १६ वर्ष लगे इसकी लागत १ करोड़ से अधिक की है। इसकी पाल में जो धनुष के आकार की तीन मील लम्बी है, राजनगर की खानों के सफेद संगमरमर के पत्थर लगे हुए हैं। पाल पर एक सुन्दर स्थान है जिसको 'नौचोकी' कहते हैं, जिसकी छत्रियों में खुदाई का बहुत उम्दा काम किया हुआ है। यह मेवाड़ की उस समय की कारीगरी का बढ़िया नमूना है। इन्हीं में राजप्रशस्ति नामक महाकाव्य जो मेवाड़ का इतिहास है २५ शिलाओं पर खुदा हुआ है जो पढने और देखने योग्य है। इसके पासही एक पहाड़ी पर दयालशाह का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। पाल पर द्वारकाधीश का मन्दिर, महल तथा दूसरी ओर राजनगर का कस्बा है।

उदयसागर—यह झील उदयपुर से ६ मील पूर्व में देवारी के पास है। इसको महाराना उदयसिंहजी ने बनवाई थी। इसकी लंबाई २।। मील और चौड़ाई २ मील है। इसमें १८५ वर्गमील का जल आता है इसकी पाल बड़े बड़े संगीन पत्थरों की बनी हुई है। इसकी बनावट दूसरी झीलों की पालसी नहीं है। इसकी शोभा भी बड़ी ही अच्छी है। इस झील के आस पास की पहाड़ियां घने जंगलों से ढकी हुई है और शिकार (आखेट) के लिये कई ओदियां बनी हुई हैं। बांध के सामने के तट पर मेड़ीमगरी नाम के स्थान पर महल बने हुए हैं।

पीछोला—यह झील महाराना लाखा के समय में बनी हुई कही जाती है इसकी लम्बाई २।। मील चौड़ाई १।। मील है। ५६ वर्ग मील की भूमि का जल इसमें आता है। इसके पूर्व किनारे की पहाड़ियों पर उदयपुर शहर का बहुत बड़ा हिस्सा और राज महल बने हुये हैं। इसके किनारे किनारे बहुत दूर तक कहीं एक ओर, और बहुत करके दोनों ओर मन्दिर, घाट और हवेलियां आगई हैं। बीच में कई सुन्दर द्वीप महल हैं। इस झील से नगर की शोभा बढ़ गई है। 'बडी पाल' नामक जगह में शाम को सूरज के छिपने के समय का दृश्य बड़ा सुन्दर मालूम होता

है। यह झील सुन्दरता में दुनियां भर की बहुत सुन्दर जगहों में से एक है।

फतहसागर—इस झील को भूतपूर्व महाराणा साहब ने बनवाई, इसलिये यह फतहसागर के नाम से पुकारी जाती है यह झील १॥ मील लंबी है और इसकी सब से अधिक चौड़ाई एक मील है। इस झील के किनारे २ पहाडियों को काट कर पत्थर की सुन्दर कटहरे वाली एक सड़क बनी हुई है। पाल पर छत्रियां बनी हुई हैं और ठीक बीच में एक छोटासा सुन्दर सफेद संगमरमर का महल है। पाल के पास पानी बहुत गहरा है। इसके बीच में घने पेडों से ढके हुए छोटे पहाड़ी टापू हैं।

पाल पर जाने वाली चक्करदार सड़क के एक ओर पहाडियां तथा दूसरी ओर बहुत दूर तक सरोवर का जल और उसके सामने फिर पहाडियों की कतार और शाम को सूरज की लाल किरणें पानी में पड़कर ऐसी सुन्दर दिखाई देती हैं कि देखने वालों के मन में आनन्द की लहर सी उठने लगती है।

राज-विभाग

देश की रक्षा के विचार से इस राज्य का शासन विभाग बड़ी ही उत्तमता से किया हुआ है। चारों ओर

सीमा पर तथा उसके आसपास में सरदार उमरावों के ठिकाने हैं, जो सेना सहित रहते हैं जहां एक राज्य से दूसरे राज्य की सीमा मिलती है, वहां खालसे के बड़े २ ज़िले कायम कर दिये गये हैं। यह राज्य बहुत करके चारो ओर पहाड़ों से घिरा होने के कारण देश को बचाने के लिये जगह २ पर गढ़ और किले बनाये गये हैं। इनकी संख्या करीब ८४ तक पहुंचती है। मोर्चों के स्थानों में अधिक सेना रहती है। जैसे कुम्भलगढ़ का किला मारवाड़ की सीमा पर इसी प्रकार जहाजपुर माँडल-गढ़ और सराड़ा में भी सेना रहती हैं।

माल गुजारी के विचार से कुल राज्य तीन भागों में बटा है:—

(१) खालसा—इसकी मालगुजारी महाराणा साहब के ख़जाने में जाती है।

(२) जागीर और भौम

(३)शासनिक—इसमें दान पुण्य तथा मन्दिरों के भेट की हुई जमीन शामिल है।

❀ खालसा ❀

इन्तजाम और मालगुजारी के प्रबन्ध के लिये खालसा १८ जिलों में बटा है प्रत्येक जिले में एक हाकिम और

हरएक नियावत पर हाकिम की माहतेती में एक नायब हाकिम रहता है। इन हाकिमों को दीवानी फौजदारी और माल के मुकद्मों को तय करने के लिये नियमित अधिकार रहते हैं। इन के फैसलों की अपीले सेसन कोर्टों में और उनकी हाई कोर्ट (महद्राज सभा) में होती है ।

जिले ये हैं—(१) गिरवा,(२)मगरा,(३)कुम्भलगढ़, (४) आसींद, (५) हुर्डा, (६) जहाजपुर, (७) मांडलगढ़, (८) चित्तौड़गढ़, (६) सादड़ी, (१०) कपासन (११) रासमी, (१२) खमणोर, (१३) राजनगर, (१४) सहाड़ां, (१५) भीलवाड़ा, (१६) खेरवाड़ा (१७) राघवगढ़ (१८) लसाडिया

गिरवां—(गिर्दनवाह) इस जिले का मुख्य स्थान उदयपुर है इसमें उदयपुर तथा उसके पास का बहुतसा प्रदेश आ जाता है। इसके दो विभाग हैं—एक बाहरी गिरवा और दूसरा भीतरी गिरवा। उदयपुर के आसपास की पहाड़ियों से घिरी हुई जगह को भीतरी गिरवा कहते हैं और उन पहाड़ियों से बाहर की भूमि को बाहरी गिरवा कहते हैं। इस जिले में तीन नियाबतें हैं:—(१) गिरवा, (२) मावली, (३) ऊंठाला। चार थाने हैं खेमली, मावली, ऊंठाला और खेरोदा। नाई और पारसोली में तहसीलदार रहते हैं।

उदयपुर—यह रमणीय सुन्दर शहर राजपूताने के दक्षिण प्रदेश में समुद्र तट से २०६४ फीट की ऊंचाई पर पिछोला नामक झील के किनारे पर बसा हुआ है। महाराणा उदयसिंहजी ने इसको सुन्दर और अच्छा स्थान समझ कर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाई तब ही से यह मेवाड़ देश की राजधानी है।

दक्षिण की तरफ बड़े और भव्य राजमहल शहर के सब से ऊंचे स्थान पर होने के कारण बहुत ही सुन्दर लगते हैं। ये राजमहल राजस्थान के अन्य राजमहलों से बहुत ही बड़े और निराले ढंग के हैं।

इन महलों के उत्तरी भाग में सड़क पर श्री जगदीश का मन्दिर देखने लायक है। यह ऊंचे स्थान पर, बड़ा और ऊंचा होने के कारण बहुत ही सुन्दर है। इसके चारों और खुदाई का सुन्दर काम किया हुआ है। यह उत्तरी भारत के सुन्दर और देखने योग्य मन्दिरों में से है।

शहर में और भी वैष्णवों व जैनियों के कई अच्छे २ मन्दिर हैं।

नगर के पास दो बड़े तालाब तथा कहीं २ बांध की शोभा व उनके पीछे बड़े बड़े बाग, झील के एक किनारे बड़े २ शानदार ऊंचे शिखर वाले राजमहल, बीच में

हरियाली और कारीगरी के नमूने—सुन्दर द्वीप महलों की छटा, दूसरी ओर वन से ढके हुए पहाड़ी स्थान इतने सुन्दर और चित्त को सुखी करने वाले हैं कि यहां की इस निराली सुन्दरता को देखकर लोग बड़े सुखी और खुश होते हैं।

यही कारण है कि योरोप, अमेरिका जैसे दूर देशों के दर्शक इस निराली छटा को देखने के लिये हर साल यहां आते हैं।

इन तालाबों में कई छोटे बड़े टापू हैं, जिनमें से दो का हाल बतावेंगे जोकि सब से सुन्दर हैं।

जगनिवास—यह राजमहलों के सामने ही है। इस में हौज, फव्वारे, बगीचा व महल देखने लायक हैं। तालाब के बीच में आजाने से इन महलों में गर्मी के दिनों में बड़ी ठंडक रहती है।

जगमन्दिर—ये महल जगनिवास से कुछ दक्षिण में एक बड़े टापू पर बने हुए हैं। ये जगनिवास से पुराने भी हैं। कहा जाता है कि शाहजादा खुर्रम (बादशाह शाहजहां) यहां कुछ समय तक रहा था। उसके लिये महाराणा कर्णसिंहजी ने एक महल बनवा दिया था, जो गोल महल के नाम से मशहूर है इसमें आगरे के मशहूर

ताजमहल के ढंग पर सुन्दर पच्चीकारी का काम हुआ है। कोई अचरज की बात नहीं कि जब वह बादशाह हुआ इसी ढंग पर ताजमहल को बनवाया हो।

गदर के समय महाराणा स्वरूपसिंहजी ने कई अंग्रेजों को यहां रख कर बचाया था। इसमें हौज, फव्वारे और बगीचे भी है।

सज्जननिवास बाग—इस को गुलाब बाग भी कहते हैं। यह बड़ा ही लम्बा चौड़ा है। यह राजपूताने के अच्छे उपवनों में से है जहां कई तरह की वनस्पति, फल फूल, पौधे दिखाई देते हैं। इसमें एक चिड़िया खाना है जहां कई तरह के जानवर और चिड़ियां हैं। इसके ऊंचे हिस्से में महल देखने लायक है। बाग के पूर्वी हिस्से में 'विक्टोरिया हॉल' नामक बड़ा और सुन्दर भवन है, जिसमें पुस्तकालय, वाचनालय और अजायबघर है। श्रावण मास के हरएक सोमवार को यहां मेला लगता है।

सहेलियों की बाड़ी— फतहसागर बांध के नीचे ही एक दूसरा बाग राज्य की तरफ से बनवाया हुआ है। इसमें महल और सुन्दर बगीची है इसमें कई जगह फव्वारे लगे हुए हैं जो देखने में बड़े ही अच्छे मालूम होते हैं।

राजपूताने में फव्वारे की ऐसी सुन्दर छटा कहीं नहीं है। मन बहलाव के लिये यह बाग बहुत ही अच्छी

जगह है। श्रावण कृष्णा ३० को पुरुषों के लिये तथा दूसरे दिन सिर्फ स्त्रियों के लिये मेला लगता है।

सज्जनगढ--शहर के पश्चिम में एक कोस की दूरी पर एक पहाड़ पर सज्जनगढ नाम का किला बना हुआ है। यहां के महलों में खुदाई का सुन्दर काम है। यह गढ ऊंचाई पर होने के कारण वहां से पीछोला, राजमहल, फतहसागर तथा दूर २ के गांवों व पहाड़ों की सुन्दर छटा देखने को मिलती है। झील और पहाड़ों की निराली छटा देखने को यह अच्छी जगह है।

शहर के आस पास देखने लायक अन्य स्थानः--

पीछोला झील के दक्षिण की ओर पहाड़ियों में आखेट के लिये कुछ सुन्दर ओदियां बनी हुई हैं, जहां से कई एक पहाड़ों की सुन्दर एवं निराली छटा देखने को मिलती है। इनमें मुख्य खास ओदी है।

सरोवर के दक्षिण में हरिदासजी की मगरी और दक्षिण-पश्चिम में सियारामपुर (सिसारमा) में श्री वैद्यनाथ महादेव का मन्दिर देखने योग्य है।

नाहर मगरा--उदयपुर से सड़क जाती है। खेमली स्टेशन से भी जाते हैं। यहां सुन्दर महल बाग तथा आस पास में कई ओदियां बनी हुई हैं जिससे यह स्थान बहुत ही रमणीय लगता है।

आहाड़—उदयपुर से डेढ़ मील के अन्तर पर इशान कोण में आहाड़ नामक पुराने नगर के खंडहर हैं। आज कल पुराने नगर की जगह में उसी नाम का नया गांव है।

यहां गंगोद्भव नामक कुण्ड है। इसको तीर्थ समझते हैं। लोगों का विश्वास है कि इसमें गंगा का जल आता है। कुण्ड के बीच एक छत्री बनी हुई है जिसको विक्रमादित्य के पिता गंधर्वसेन का स्मारक बतलाते हैं। आँवली एकादशी को भीलों का मेला लगता है।

कुण्ड के निकट ही कोट से घिरा हुआ 'महासतियां' नाम की जगह है जहां महाराणाओं का अग्निसंस्कार होता है। महाराणा प्रतापसिंहजी के बाद महाराणाओं का अग्नि संस्कार यहीं हुआ है। यहां कई छत्रियां बनी हुई हैं, जिनमें महाराणा अमरसिंहजी प्रथम तथा द्वितीय और महाराणा संग्रामसिंहजी द्वितीय की छत्रियां देखने लायक हैं।

प्राचीन समय में यह एक धनी और बड़ा नगर था, जिसमें कइ देवालय बने हुए थे। यह भूकम्प के कारण नष्ट हो गया। इन खण्डहरों में धूल कोट नामक एक ऊंचा स्थान है। पुराने समय के कई एक जैन मन्दिर देखने योग्य हैं।

उदयपुर से पांच कोस पर उभयेश्वर तथा अढ़ाई कोस पर नाई गांव के पास नन्देश्वर और अम्बेरी के पास

अम्बरेश्वर नाम के शिवालय देखने योग्य हैं। पहाड़ों में आजाने के कारण तथा वहां पानी के सोते बहने के कारण वहां के दृश्य बहुत ही सुन्दर हैं।

उदयपुर के निकट कालकामाता, गोवर्धनविलास, सीतामाता, अम्बामाता और शिकार बाड़ी आदि स्थान अच्छे हैं।

मगरा—यह जिला राज्य के दक्षिण में है। इसमें भीलों की विशेष बस्ती है। ये लडाकू होते हैं। ये लोग पालों (टेकरियों पर अलग अलग झोपडे बनाकर रहने की बस्ती) में रहना विशेष पसंद करते हैं। हाकिम जिला सराडे मे रहते हैं। यहां गढ़ बना हुआ है। यहां स्कूल तथा अस्पताल हैं। नियाबतें ये हैं (१) सराड़ा (२) जावर (३) कल्याणपुर।

थाने ये हैं:—सराडा (ख) पलोदडा (ग) बामण्या (घ) ऋषभदेवजी (ङ) कल्याणपुरा (च) भौराई (छ) बारापाल (ज) सोम।

जावर—उदयपुर से १६ मील दक्षिण में जावर नाम का पुराना स्थान है। यहां चांदी और शीशे की खाने हैं। जब खानें चालू थीं उस समय यहां बहुत बडी बस्ती थी कई

एक जैन, शिव और विष्णु के मन्दिर अब भी अच्छी दशा में पाये जाते हैं। यहां जावरमाता का प्रसिद्ध मन्दिर है।

यहां रमाकुण्ड नामक एक बड़ा कुण्ड तथा उसके तट पर रामस्वामी का सुन्दर मन्दिर देखने योग्य है।

अकबर के साथ लड़ाइयों के दिनों में महाराणा प्रतापसिंहजी वहां एक ऊंची पहाड़ी पर 'जावरमाला' नामक स्थान में मय खजाने के रहा करते थे। पहाड़ी के भीतर महल तथा जलाशय भी हैं।

प्रसिद्ध भामाशाह की हवेली भी यहां बताई जाती है। किसी समय में यह स्थान वैभवशाली था, जैसा कि उसके खंडहरों के देखने से पता चलता है।

चावण्ड—प्रसिद्ध तीर्थ ऋषभदेवजी जाते हुए परसाद गांव से ६ मील पूर्व में पुराना गांव है। गांव से आध मील की दूरी पर महाराणा प्रतापसिंहजी के बनाये हुए महल तथा चामुण्डा देवी का मन्दिर है। यह स्थान विकट पहाड़ियों के बीच आ गया है। यहीं महाराणा प्रतापसिंहजी का स्वर्गवास हुआ था। वहीं छत्री है। यहां से करीब डेढ़ मील की दूरी पर बंडोली नाम के गांव के पास बहने वाले एक नाले के पास उनका अग्निसंस्कार हुआ था। तहसील-दार रहते हैं।

(३) कुम्भलगढ़—यह जिला राज्य के पश्चिमी भाग में अरवली पहाड़ियों के बीच में है। हाकिम केलवाड़े में रहते हैं। कुम्भलगढ़, सायरा और रींछेड़ तीनों स्थानों में थाने और नियाबतें हैं। इस जिले की भूमि राज्य में सब से ऊंची है।

कुम्भलगढ़—यह उदयपुर से ४० मील की दूरी पर एक पहाड़ पर बना हुआ है, जिसकी ऊंचाई समुद्र की सतह से ३५६८ फीट है। यह किला मजबूत और बड़ा है। दुर्गम पहाड़ियों के बीच में आने के कारण वह बैरियों से जीता नहीं जा सकता। प्रसिद्ध महाराणा कुम्भा ने किले को बनवाया, इस कारण उन्हीं के नाम से यह पुकारा जाता है। किले पर महल तथा मन्दिर बने हुए हैं। किले का सब से ऊंचा हिस्सा जिसको कटारगढ़ कहते हैं, सुन्दर और देखने लायक है। किले पर बाणमाता, नील-कण्ठ महादेव के मन्दिर और वर्त्तमान महाराणा साहब के बनाये हुए सुन्दर महल देखने योग्य हैं। ऊंचाई पर होने से आबू की तरह ठंडे रहते हैं। यह प्रसिद्ध किला देखने योग्य है। किले के नीचे झालीबाव तथा मामादेव का कुण्ड है। मामादेव के कुण्ड के निकट ही मेवाड़ के वीरवर पृथ्वीराज का दाह स्थान है।

महलों की छत से गोढ़वाड़ की आबादी और छोटी छोटी पहाड़ियों की छटा बहुत ही उम्दा मालूम होती है।

किले से दो मील पश्चिम-दक्षिण में पहाड़ की गुफा में परशुरामजी का रमणीय मन्दिर है। परशुरामजी से दो मील वेड़ा का मठ नामक बहुत सुन्दर स्थान है। यहां की छटा देखने योग्य है। उदयपुर से कुम्भलगढ तक पक्की सड़क बनी हुई है।

इस जिले में सीताफल और आम के पेड़ बहुतायत से हैं। तथा गन्ने की खेती अच्छी होती है। सायरे से भाणपुरा की नाल में होकर प्रसिद्ध तीर्थ राणपुराजी को जाते हैं। यह मेवाड़ की सीमा से १ कोस तथा भाणपुरा से ३ कोस हैं। यह भारतवर्ष के प्रसिद्ध दर्शनीय मन्दिरों में से है। यह उस समय का बना हुआ है जब कि गोढ़वाड़ (गोद्वार) मेवाड़ राज्य में था।

(४) आसींद—जिले के हाकिम आसींद में रहते हैं। आसींद अच्छा कस्बा है; जो खारी नदी के बांयें किनारे पर बसा हुआ है। यहां के सवाई भोज देवजी मशहूर हो गये हैं; जिनका मन्दिर यहां बना हुआ है।

(५) हुर्डा—यह जिला राज्य के उत्तर में है। हाकिम हुर्डा में रहते हैं जो जिले का हैडक्वार्टर है। हुर्डा

और शम्भूगढ़ दो नियाबतें हैं। गुलाबपुरा व्यापार की अच्छी मंडी है।

जहाजपुर—यह जिला राज्य के ईशान कोण में है। तीन नियाबतें हैं-(१) जहाजपुर (२) पंडेर (३) शक्करगढ़ थाने ये हैं-(१) इटून्दा (२) टीकड़ (३) पंडेर। इटून्दे में अच्छा किल बना हुआ है तथा आबहवा भी अच्छी है।

जहाजपुर—जिले का मुख्य स्थान और मेवाड़ के पुराने स्थानों में से है। लोगों का कहना है कि राजा जनमेजय ने नागों के होम का यज्ञ यहां किया था, इससे इसका नाम यज्ञपुर हुआ, उसीसे बिगड़ कर जाजपुर या जहाजपुर है। यहां पहाड़ पर एक अच्छा किला बना हुआ है। कस्बा अच्छा है। यहां अच्छे महल बने हुए हैं हिन्दी मिडिल स्कूल, कन्या विद्यालय तथा अस्पताल हैं। इसके आसपास कई पुराने स्थान हैं। यहां से ७ मील अग्नि कोण में धौड़ नाम की एक पुरानी सुन्दर जगह है। जहाजपुर में लकड़ी पर दानेदार रंगाई अच्छी होती है।

इस जिले में पारोली से कुछ दूरी पर एक पहाड़ी पर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ का सुन्दर मन्दिर बना हुआ है।

जहाजपुर जिले में 'मीणों' की बस्ती बहुत है। ये हट्टे कट्टे और निडर होते हैं।

(७) मांडलगढ़—यह जिला राज्य के ईशान कोण में है। मांडलगढ़ जिले का हेडक्वार्टर है। मांडलगढ़ और कोटड़ी ये दोनों नियाबतें हैं। बिगोद और कोटड़ी में 'थानें' हैं।

किला—यह किला समुद्र की सतह से १८५० फीट ऊंची पहाड़ी के अगले हिस्से पर बना हुआ है। इसको किसने बनाया यह ठीक पता नहीं। इसके चारों तरफ करीब आध मील की लम्बाई का बुर्जों सहित कोट बना हुआ है। गढ़ में सागर और सागरी नाम के दो जलाशय हैं। किले पर लोगों की बस्ती है। यहां जैन और शिव के कई मन्दिर हैं।

किले की तलेटी में आबादी बहुत है। यहां सरकारी स्कूल, अस्पताल और लड़कियों के लिये कन्या पाठशाला है।

(८) चित्तौड़गढ़—जिले का हेडक्वार्टर चित्तौड़गढ़ है। चित्तौड़गढ़, कनेरा और कुवाखेड़ा तीन नियाबतें हैं। कनेरा और विजेपुर में थाने हैं।

चित्तौड़—यह राज्य का बड़ा कस्बा है। यह किले की तलेटी में बसा हुआ है। यहां अंग्रेजी मिडिल स्कूल, अस्पताल, कन्या पाठशाला तथा रुई का पेच है।

चित्तौडगढ़—शायद ही कोई ऐसा भारत का रहने वाला होगा जिसने हिन्दुस्थान के हिन्दुओं की शान रखने वाले चित्तौड़गढ़ का नाम न सुना हो; क्योंकि हिमालय से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक भारतवर्ष का ऐसा कोई हिस्सा न होगा, जहां कृष्ण भक्त मीराबाई, हिन्दुकुल सूर्य महाराणा प्रताप और जान देकर भी अपनी इज्जत को बचाने वाली महाराणी पद्मिनी की तारीफ न की जाती हो। यहां की भूमि ने भारतवर्ष ही में नहीं लेकिन दुनियां भर में सब से अधिक वीर पुरुष पैदा किये हैं। यहां की धूल उन बहुत से वीर पुरुषों और स्त्रियों के रुधिर से सनी हुई है जिन्होंने देश, धर्म और इज्जत को बचाने के लिये अपनी जान देदी। अल्लाउद्दीन, बहादुरशाह और अकबर बादशाहों के समय में तीन 'साके' हुए जिनमें अगणित मनुष्य मारे गये थे।

भारतवर्ष के लोग यहां की धूल को तीर्थ की मिट्टी की तरह पवित्र मानकर ले जाते हैं, यह है भी ऐसी ही भूमि जिसने हिन्दू धर्म को बचाकर भारत का सर (झुकने न दिया) ऊंचा उठाये रखा।

यह भारतवर्ष के सब से मजबूत और बड़े मशहूर किलों में से है। जिसके लिये यह कहावत प्रसिद्ध है 'गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़ैया'।

इस किले की सब से बड़ी ख़ास बात यह है कि गढ़ पर लोगों की बस्ती है, खेती होती है तथा पानी की बहुतायत है, जो और कहीं मुश्किल से मिलेगी।

यह गढ़, चित्तौड़ ग्राम की चौरस भूमि से क़रीब ५०० फ़ीट ऊँची, उत्तर से दक्षिण दिशा में फैली हुई एक पहाड़ी पर बना हुआ है, जिसकी लम्बाई करीब सवा तीन मील और चौड़ाई कहीं २ आध मील तक है। पहाड़ी के ढालू हिस्सों पर घना जंगल फैला हुआ है। किले के चारों ओर कोट बना हुआ है, जिसकी लम्बाई करीब ७ मील है। क़िले में घुसने के लिये तीन आम दरवाजे हैं, पूर्व में सूर्य पोल; पश्चिम में रामपोल और उत्तर में लाखोटे की बारी है।

किले के दक्षिण भाग में बड़े २ तालाब तथा छोटे मोटे कई कुण्ड हैं।

किले पर कई पुरानी ऐतिहासिक देखने लायक जगहें हैं।

यह क़िला अर्जुन के भाई भीम का बनाया हुआ कहा जाता है। भीम के नाम के भीमगोड़ी, भीमलत कई स्थान हैं।

बाद में मोर्यवंश के चित्राङ्गद नामक राजा के द्वारा बसाये जाने के कारण इसका नाम चित्रकूट पड़ा, जिससे बिगड़ा हुआ वर्त्तमान नाम चित्तौड़ है।

किले पर मुख्य देखने लायक जगहें ये हैं—

कीर्ति-स्थम्भ—यह पूर्व दिशा में कोट के पास ही करीब ८० फीट चौकोना ऊंचा खम्भ की तरह खड़ा है। जिसका घेरा नीचे से ३० फीट तथा सिरे पर १५ फीट है। स्थम्भ में ऊपर से नीचे तक बढ़िया संगतराशी का काम किया हुआ है। यह सात मञ्जिला है। इसके भीतर सीढ़ियां बनी हुई हैं। यह किसी जैन धर्मावलम्बी सेठ का बनाया हुआ कहा जाता है। इसमें जैन मूर्तियां खुदी हुई हैं। यह जैनियों के लिये बड़े गौरव की जगह है।

जयस्थम्भ—यह कीर्तिस्थम्भ से कुछ दूरी पर सफेद पत्थरों की बनी हुई एक मशहूर मीनार है। इसको महाराणा कुम्भा ने मालवा और गुजरात के बादशाहों को एक साथ परास्त करने की अपनी इस असाधारण विजय की यादगार में बनाया था। यह नौ मञ्जिला है। ऊपर तक घूमती हुई गैलरी नुमा सीढ़ियां लगी हुई हैं। इसकी चौड़ाई नींव के पास ३० फीट और गुम्बज के नीचे १७॥ फीट है इसकी ऊंचाई १२० फीट के करीब है। इसके बनने में करीब १० वर्ष लगे।

यह संसार की देखने लायक चीजों में से है। इसके बारे में टॉड साहब लिखते हैं कि अगर कोई इमारत इसके

मुकाबले की है तो सिर्फ दिल्ली की कुतुब-मीनार है। यद्यपि वह ऊंचाई में इससे कुछ बड़ी है, लेकिन कारीगरी की सफाई के विचार से वह इससे बहुत ही हल्के दर्जे की है।

पुरानी वस्तुओं के प्रसिद्ध खोजी फर्गुसन साहब रोम देश के ट्रन्जन नगर के दुनियां में मशहूर स्तम्भ से मुकाबिला करते हुए कहते हैं कि हो सकता है कि इसकी खुदाई का काम उससे कुछ कम हो लेकिन बनाने की सफाई में यह जयस्तम्भ उससे कहीं अधिक बढ़-चढ़ कर है।

किले पर अन्य देखने योग्य स्थान ये हैं:—

कुम्भश्याम का मन्दिर, तुलजा भवानी, अन्नपूर्णा, कालिका माता, शृंगार चंवरी, अद्भुद्बाबा, नीलकण्ठ, शतबिसदेवरा आदि मन्दिर तथा कुक्कुटेश्वर, सूर्यकुण्ड, भीमगोडी, गोमुख आदि जलाशय और पद्मिनी, जयमल, पत्ता, हिंगलु-अहाड़ा के महल और नये महल देखने लायक हैं।

चित्तौड़गढ़ की बस्ती भारत के पुराने नगरों में से है। बौद्ध और मौर्यकाल के समय की कई पुरानी चीजें यहां मिलती हैं। महाराणा उदयसिंहजी के समय तक यह मेवाड़ की राजधानी रही। गर्मी में रहने के लिये यह अच्छी जगह है। किले के नीचे एक सुन्दर झरना है।

सादड़ी—यह जिला राज्य के अग्निकोण में है। यह जिला उपजाऊ है। कपास की अच्छी पैदावार होती है। [१] सादड़ी और [२] भाणुजा में नियाबतें हैं। सादड़ी धोलापानी और भाणुजे में थाने हैं।

सादड़ी—यह जिले का मुख्य स्थान एवं राज्य में अच्छा व्यापारिक कस्बा है। यहां धनियों की अच्छी बस्ती है। यहां हिन्दी मिडिल स्कूल, अस्पताल तथा पेच हैं। कुछ दूरी पर भंवरमाता का स्थान बहुत ही रमणीय है।

[११] कपासन—यह जिला राज्य के मध्य में है। इसके आधीन दो नियाबतें हैं। [क] कपासन [ख] जासमा। आकोला में थाना है।

कपासन—यह जिले का मुख्य स्थान एवं व्यापारिक कस्बा है यहां अस्पताल हिन्दी मिडिल स्कूल और पेच हैं। यहां एक अच्छा सा तालाब है। जिले में जासमा और आकोला अच्छे कस्बे हैं।

करेडा—इसी जिले में करेड़ा स्टेशन के पास ही सफेद पत्थर का बना हुआ पार्श्वनाथ का बडा मन्दिर है। यहां पोष कृष्णा १० का मेला लगता है। मन्दिर के पीछे तालाब होने से सुन्दरता और भी बढ़ गई है। यहां

की आब-हवा अच्छी है। सैकड़ों यात्री दर्शनार्थ हर साल आते हैं।

(१२) रासमी:—यह जिला राज्य के बीच में है। बड़ा ही उपजाऊ है। रासमी और गलूंड दोनों जगह थाने और नियाबतें हैं। हाकिम रासमी में रहते हैं।

मातृ-कुंडियां—यह तीर्थस्थान बनास नदी के किनारे रासमी जिले में है। यहां कई मन्दिर हैं। मुख्य मन्दिर मंगलेश्वर महादेवजी का है। वैशाख शुक्ला १५ पूर्णिमा को बड़ा भारी मेला लगता है। कहते हैं कि इसमें नहाने से परशुरामजी की मां के मारने का जो पाप लगा था वह छूट गया।

(१३) खमणोर—यह जिला नाथद्वारे के पास है। इसका मुख्य स्थान खमणोर है, जहां हाकिम रहते हैं। खमणोर से एक मील की दूरी पर 'हल्दीघाटी' का मशहूर लड़ाई का मैदान है। यहां वीरवर महाराणा प्रतापसिंहजी अकबर के सेनापति मानसिंह के साथ लड़े थे। हल्दीघाटी से एक कोस की दूरी पर बलीचे गांव के पास महाराणा के मशहूर वीर घोड़े चेटक की यादगार है। यहां प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ला ७ मी को मेला लगता है।

इस जिले में गुलाब बहुतायत से पैदा होता है। और उसका इत्र बनता है।

(१४) राजनगर—यह जिला राज्य के उत्तरी-पश्चिमी भाग में है। राजनगर मुख्य कस्बा है; जहां हाकिम रहते हैं। इस जिले में राजसमुद्र नामक मशहूर झील है।

(१५) सहाड़ाँ—यह जिला राज्य के उपजाऊ जिलों में से हैं। तीन नियाबतें हैं (१) सहाड़ाँ (२) रायपुर (३) रेलमगरा। हाकिम सहाड़ाँ में रहते हैं। शिवपुर में थाना है।

(१६) भीलवाड़ा—यह जिला राज्य के ईशान कोण व उत्तर में आ गया है। तीन नियाबतें हैं:—(१) भीलवाड़ा [२] मांडल [३] पुर–तीनों स्थानों के अलावा बागोर में थाना है।

भीलवाड़ा—यह राज्य की बड़ी तिजारती मंडी है। जिले के हाकिम यहां रहते हैं। यहां अंग्रेजी मिडिल स्कूल, अस्पताल और डाकखाना है। यहां रूई लोढने और गांठ बांधने का बड़ा पेचघर है। यहां बर्तनों पर कलई उम्दा होती है।

पुर—यह राजपूताने के पुराने स्थानों में से है। शालिवाहन के खंडहर यहां बतलाये जाते हैं। पोरवाड़ जाति की पैदायश भी यहीं से मानी जाती है। यहां की काली तम्बाखु प्रसिद्ध है।

जिले के अन्य प्रसिद्ध कस्बे ये हैं:—मांडल, सांगानेर और बागोर।

खेरवाडा—इस जिले में भौमट का दक्षिणी भाग है। हाकिम खेरवाडे में रहते हैं। यहाँ अंग्रेजी मिडिल स्कूल, कन्या विद्यालय तथा अस्पताल हैं। यहाँ 'भीलकोर' पल्टन रहती है। इस जिले में भौमट के बड़े बड़े जागीरदार हैं। बलीछे में थाना है।

राघवगढ (राघोगढ) इस जिले में विशेष कर भौमट का उत्तरी भाग है। यह हाल ही में जिला कायम हुआ है।

लसाड़िया—यह जिला राज्य के पूर्व-दक्षिण में है। हाकिम लसाड़िये में रहते हैं। पारसोले में तहसीलदार रहते हैं।

जागीर

मेवाड़ में सरदारों के तीन दर्जे हैं—[क] सोला [ख] बत्तीस और [ग] गोळ।

पहिले दर्जे के सरदार सोला कहलाते हैं वे ये हैं:—

बड़ी सादड़ी	देलवाड़ा	भैंसरोड़गढ़
बेदला	आमेट	कुरावड़
कोठारिया	गोगुन्दा	मेजा
सलूम्बर	कानोड़	सरदारगढ़
घाणेराव	मीन्डर	(महाराणा साहब के
बिजोल्या	बदनोर	नजदीकी बड़े२भाई बेटे)
बेगुं	बानसी	शिवरती करजाली
देवगढ़	पारसोली	बनेड़ा शाहपुरा

इन क्षत्रिय उमरावों के अतिरिक्त एक मुसलमान उमराव हैं जिन्हें सिन्धी जमादार कहते हैं।

द्वितीय श्रेणी के सरदार 'बत्तीस' कहलाते हैं, वे ये हैं।

(१) हम्मीरगढ़ (२) भदेसर (३) बोहेड़ा (४) भूणास (५) पीपल्या (६) बेमाली (७) तांणा (८) रामपुरा (९) खैराबाद (१०) महुआ (११) लूंणदा (१२) थाणा (१३) बंबोरा (१४) धनेरिया (१५) कैलवा (१६) बड़ी रूपाहेली (१७) भगवानपुरा (१८) रूपनगर (१९) नेतावल (२०) पीलाधर (२१) लीमाड़ा (२२)

बाठरड़ा (२३) बंबोरी (२४) सनवाड़ (२५) करेड़ा (२६) अमरगढ़ (२७) लसाणी (२८) धरियावद (२६) फलीचड़ा (३०) संग्रामगढ़ (३१) विजैपुर, बसी, झाड़ोल और मोही।

तीसरे दर्जे के सरदार 'गोल' कहलाते हैं। इनमें भी कुछ ताजीमी सरदार हैं।

भौमट

भौमट में छोटे मोटे कई ठिकाणे हैं जिनमें मुख्य ये हैं:—

जवास, पहाड़ा, मादड़ी, चाणी, थाणा, जुड़ा, मेरपुर, ओगणा, पानरवा, मादड़ा।

जागीरदारों के मुख्य वर्णन योग्य कस्बे

बेदला—यह आयड़ की नदी के बायें किनारे उदयपुर से करीब ३ मील की दूरी पर है। गांव अच्छा है। पास में नदी व पहाड़ियों के आ जाने से इसकी शोभा बढ़गई है। थोड़ी दूरी पर सुखदेवी माताजी का प्रसिद्ध मन्दिर है जहाँ प्रति रविवार कई रोगी दर्शनार्थ आते हैं। इस पट्टे के बहुत से गांव चित्तौड़गढ़ के उत्तर में हैं। चित्तौड़गढ़ के पास नगरी नामक एक गांव है जो भारतवर्ष के प्राचीन स्थानों में से है। इसके खंडहर दूर २ तक

दीख पड़ते हैं । इसका पुराना नाम 'मध्यमिका' था जो मध्यदेश की राजधानी थी । यहाँ कई बौद्ध स्तूप हैं ।

देलवाडा--यह उदयपुर के ठीक उत्तर में १४ मील की दूरी पर अर्वली पहाड़ियों की पूर्वीय श्रेणी में बसा हुआ है । कुछ दूरी पर एक पहाड़ी पर राठेश्वरी-राष्ट्रसेना माता का मन्दिर है । किसी समय में यह बहुत धनी नगर था । यहां कई मन्दिर होने के कारण इसका प्राचीन नाम 'देवकुल पाटक' था । इस समय में भी यहां कई जैन मन्दिर एवं सैकड़ों जैन मूर्तियां हैं ।

गागुन्दा--यह उदयपुर से उत्तर-पश्चिम कोने में समुद्र की सतह से करीब तीन हजार फीट की ऊंचाई पर अरवली पहाड़ियों में बसा हुआ है । यह व्यापारिक स्थान है । यहां की आबहवा अच्छी है । प्रसिद्ध महाराणा प्रतापसिंहजी का राजतिलक यहीं हुआ था । आसपास में कई ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक देखने योग्य स्थान हैं ।

देवगढ--यह उदयपुर के ईशानकोण से ६४ मील की दूरी पर उत्तर में है । यह अच्छा कसबा है । यहां सुन्दर किला बना है । यहां से तीन मील की दूरी पर आंजणा नाम का गांव है, जहां नाथों का मशहूर मठ है । यहां महादेवजी का मन्दिर है जो बहुत ही रम्य है ।

बनेडा--यह उदयपुर के उत्तर पूर्व की दिशा में करीब ९० मील की दूरी पर बसा हुआ है। यह अच्छा सुन्दर कस्बा है। यहां अस्पताल, हिन्दी मिडिल-स्कूल तथा डाकखाना है। कस्बे के चारों ओर कोट बना हुआ है। यहां के अधिपति 'राजा' कहलाते हैं। यह सुव्यवस्थित ठिकाणा है।

बिजोल्या—यह कस्बा उदयपुर से ११२ मील की दूरी पर उत्तर-पूर्व दिशा में है। इसका पुराना नाम विन्ध्य-वल्ली था। यह 'उपरमाल' नामक पठार के ऊपर बसे हुए होने के कारण यहां का दृश्य बड़ा ही सुन्दर है। पहिले यहां कई मन्दिर थे, जिनमें बहुत से पुराने होकर गिर गये हैं। अब भी जो मन्दिर वहां हैं वे अपनी प्राचीनता के लिए कम महत्व के नहीं हैं। बिजोल्या के कोट के निकट के तीन मन्दिरों तथा गढ़ के दरवाजे की खुदाई का काम बहुत ही सुन्दर है। यहां 'मन्दाकिनी' नाम का बड़ा कुण्ड है, जहां बहुत से यात्री स्नान करने आते हैं। बिजोल्या से अग्नि कोण में एक 'पञ्चायतन' नामक प्राचीन जैन मन्दिर देखने योग्य है।

इसके आस पास कई मीलों तक मन्दिर हैं। जाड़ोली से ६ मील पूर्व में 'तिलिस्मा' नामक गांव है, जहां कई पुराने स्थान हैं।

भैंसरोड़गढ़—यह उदयपुर के उत्तर-पूर्व कोने से पूर्व में १२० मील की दूरी पर ब्राह्मणी और चम्बल नदी के सङ्गम पर बसा हुआ है। नदियों के कारण किले का दृश्य बड़ा ही सुन्दर हो गया है। भैंसरोड़गढ़ से चम्बल को पार कर जाने पर तीन मील की दूरी पर 'बाडोली' के मन्दिर प्रसिद्ध हैं। भारतवर्ष भर में आबू के प्रसिद्ध जैन मन्दिर और नागदे के 'सास' के मन्दिर को छोड़कर इन मन्दिरों की बराबरी करने वाले और कोई नहीं हैं। भारतीय कारीगरी के मशहूर जानकर 'फर्गुसन' ने यहां के मन्दिरों की कारीगरी की बहुत प्रशंसा की है और इनको इनके समय के देवालयों में सब से अच्छा माना है। शेष नाग के ऊपर सोते हुए नारायण की मूर्त्ति के बारे में ता यहां तक लिखा है कि मेरी देखी हुई हिन्दू मूर्त्तियों में यह सब से अच्छी है। टॉड साहब ने लिखा है कि उसकी विचित्र और सुन्दर बनावट का यथावत् वर्णन करना लेखनी की शक्ति के बाहिर है। यहां मानो हुनर का खजाना खाली कर दिया गया है।

बदनोर—यह अच्छा कस्बा है। कई सुन्दर इमारतें हैं। यहां मशहूर वैराटगढ़ के खंडहर हैं।

बेगूं—यह उदयपुर के उत्तर-पूर्व के कोने से ६० मील पूर्व में है। कस्बा अच्छा है। यहां मजबूत किला

बना हुआ है। इस ठिकाणे में 'मेनाल' नाम का एक बहुत पुराना स्थल है। यह मेवाड़ के दर्शनीय स्थानों में से है। विशाल प्राचीन इमारतों एवं झरने का दृश्य बड़ा सुन्दर है।

सलूम्बर—यह कस्बा उदयपुर के दक्षिण-पूर्व में ४० मील की दूरी पर है। कस्बा बड़ा एवं सुन्दर है।

भींन्डर, बड़ी सादड़ी, कानोड़ आदि भी अच्छे कस्बे हैं।

सासनीक

देव-मन्दिर, ब्राह्मण, नाथ, यति, सन्यासी आदि को पुण्यार्थ दी हुई अथवा भेंट की हुई भूमि को यहां सासन कहते हैं।

जो देव-मन्दिर राज्य के अधिकार में हैं उनके लिए एक अधिकारी नियत हैं, जो हाकिम 'देवस्थान' कहलाता है। इसका मुख्य स्थान उदयपुर है। यह निम्न परगनों में विभक्त है-(१) कैलाशपुरी (२) भुवाणा (३) पलाणा (४) चारभुजा (गढ़बोर) (५) धनेरिया (६) एकलिंगपुरा यहां नायब हाकिम रहते हैं। धुलेव में दारोगा रहते हैं।

माफी के मुख्य २ ठिकाणे ये हैं:—नाथद्वारा, कांकरोली, लादूवास और खेड़ा आदि।

देवस्थान

कैलाशपुरी—उदयपुर से १३ मील उत्तर में है। यहां एकलिंगजी का मशहूर शिवालय है। यह स्थान पहाड़ों के बीच में है। एकलिंगजी महाराणा साहब के इष्टदेव हैं। ये मेवाड़ राज्य के मालिक माने जाते हैं। इसी कारण यह एकलिंगजी का राज्य कहलाता है। महाराणा साहब इनके दीवान कहलाते हैं।

यह सुन्दर मन्दिर चारों ओर कोट से घिरा हुआ है। कहते हैं कि वर्त्तमान राज्य के संस्थापक बापा रावल ने इसे बनवाया था। बाद में कई बार जीर्णोद्धार कराया गया है। मूर्ति बहुत ही सुन्दर चमत्कारी और दर्शनीय है। पूजन पाठ बहुत ही ठाठ पाट के साथ होता है। कहते हैं कि इस प्रकार का शिवजी का विधिवत् पूजन भारतवर्ष में अन्यत्र कहीं नहीं होता।

मन्दिर के पीछे एक अच्छा सा तालाब आगया है, उसमें कमल के फूल होने के कारण तथा पाल पर महल होने के कारण तालाब की शोभा बहुत बढ़ गई है।

नागदा—कैलाशपुरी से थोड़ी ही दूरी पर मेवाड़ की पुरानी राजधानी नागदा गांव है। किसी समय यह बहुत

बड़ा और धनी नगर था। यहां पुराने समय के अनेक शिव, जैन और विष्णु के मन्दिर हैं।

इन मन्दिरों में 'सासबहु' के मन्दिर बहुत ही सुन्दर और देखने लायक हैं। इनमें भी 'सास' के मन्दिर की खुदाई का काम बहुत ही सुन्दर एवं बढ़िया है। रावल खुमाण के देवरे में भी खुदाई का अच्छा काम है। यहां एक जैन मन्दिर है जिसमें शान्तिनाथ स्वामी की ९ फुट ऊंची बैठी हुई प्रतिमा है। इस अद्भुत मूर्ति के कारण इसको अद्बुदजी का मन्दिर भी कहते हैं।

धूलेव (ऋषभदेवजी)—उदयपुर से ३९ मील दक्षिण में धूलेव नाम का कस्बा है। यहां ऋषभदेवजी का प्रसिद्ध मन्दिर है। भारतवर्ष में किसी भी मूर्ति पर इतनी केसर नहीं चढ़ाई जाती जितनी कि यहां, इसलिये इनको 'केसरियानाथ' भी कहते हैं। मूर्ति श्याम रंग की होने के कारण भील लोग 'कालाजी' कहते हैं। ऋषभदेवजी विष्णु के अवतारों में होने के कारण यह हिन्दुओं का भी तीर्थ है। भारतवर्ष के करीब २ सब जैन और मेवाड़, तथा आस पास के राज्यों के शैव, वैष्णव आदि यहां यात्रार्थ आते हैं। भील लोगों की ऋषभदेवजी में अटूट श्रद्धा है। इस तीर्थ में यह विशेषता है कि जैन, वैष्णव, शैव, भील, एवं

सब सच्छुद्र स्नान कर समान रूप से मूर्ति का पूजन करते हैं। प्रतिमा बहुत ही सुन्दर और तेजस्वी है। मन्दिर भी वैसा ही बड़ा और सुन्दर है। हर साल हजारों यात्री आते हैं। चैत्र कृष्णा ८ को मेला लगता है। यात्रियों के लिये बहुत अच्छा इन्तजाम है। इस मन्दिर को कब और किसने बनाया यह ठीक मालूम नहीं हुआ है।

गढ़बोर—कांकड़ोली से १४ मील पश्चिम में गढ़बोर नाम का गांव है। यहां चारभुजाजी का मशहूर विष्णु मन्दिर है। मेवाड़, मारवाड़ मालवा आदि के बहुत से यात्री आते हैं। भादवा सुदी ११ को मेला लगता है। जिस पर हजारों यात्री आते हैं।

सेवन्त्री—गढ़बोर से करीब तीन मील की दूरी पर सेवन्त्री गांव में रूपनारायण का प्रसिद्ध विष्णु मन्दिर है। यहां भी कुछ यात्री दर्शनार्थ आते हैं।

नाथद्वारा—उदयपुर से ३० मील उत्तर में नाथद्वारा नामका एक कस्बा है। वल्लभ सम्प्रदाय के इष्टदेव श्री-नाथजी का मशहूर मन्दिर होने के कारण इस स्थान का नाम नाथद्वारा हुआ। समस्त भारत के वैष्णव इसको मुख्य पवित्र तीर्थ मान कर यात्रार्थ आते हैं। तथा बहुत भेंट चढ़ाते हैं। मन्दिर का ठाठ पाठ देखने योग्य है। मूर्ति श्रीकृष्ण भग-

-वान् की है। औरङ्गजेब के अत्याचार से घबराकर गोस्वामीजी गोवर्धन पर्वत से मूर्ति को महाराणा राजसिंहजी के समय में यहां लाये थे। यहां विट्ठलनाथजी का भी मन्दिर है जो वैष्णवों के मुख्य सात स्वरुपों में से है।

यहां के अधिपति-गोस्वामीजी श्रीवल्लभाचार्य सम्प्रदाय के टीकायत हैं।

नाथद्वारे में करीब दस हजार मनुष्यों की बस्ती है। यहां बड़े शहर के योग्य कई बड़े २ महल, मंदिर, हवेलियां और बगीचे आदि हैं। यहां हिन्दी अंग्रेजी तथा संस्कृत पाठशालायें, अस्पताल, औषधालय, पुस्तकालय, प्रेस, बिजलीघर आदि शहर के अनरूप संस्थायें हैं।

समीना खेड़ा—उदयपुर से तीन मील की दूरी पर है। यहां सूर्यका मन्दिर तथा मठ है। यहां के गोस्वामीजी महाराणा साहब को सूर्यका मंत्र देते हैं। प्रति वर्ष गुरुपूर्णिमा तथा श्रावणी के दिन महाराणा साहब यहां पधारते हैं।

लादूवास—यह नाथोंका ठिकाणा है। इन्हीं नाथों में से एक आसोजी नवरात्री में खड्ग स्थापना के साथ उदयपुर में निराहार बैठते हैं।

आवरा—चित्तौड़ से करीब १४ मील दक्षिण पश्चिम में आवरा गांव में तलाब के किनारे आवरा माताजी का

प्रसिद्ध मन्दिर है। प्रति रविवार सैकड़ों रोगी विशेष कर लूले, लंगड़े और पक्षाघात (लकवा) के दूर दूर से आते हैं। मोटर तांगे आदि जाते हैं।

कांकड़ोली—नाथद्वारे से १० मील उत्तर में राजसमुद्र की पाल के पास बसा हुआ एक अच्छा सा कस्बा है।

यहां भी वल्लभ-सम्प्रदाय का श्रीद्वारकाधीश का मंदिर है। यहां की मूर्ति वल्लभ-सम्प्रदाय के सात स्वरूपों में से होने के कारण यह भी वैष्णवों के मुख्य तीर्थों में से है। औरङ्गजेब के अत्याचार के डर से यह मूर्ति भी व्रज से श्रीनाथजी के पहिले ही से स्थापित की गई है। यहां के गोस्वामी महाराणा साहब के वैष्णव गुरु हैं। राजसमुद्र की पाल के पास आजाने से मन्दिर की शोभा और भी बढ़ गई है।

कला कौशल और उद्योग धंधे।

बड़े बड़े धंधे यहां पर नहीं हैं इसकी खास वजह यह है कि लोग महनती और धनी नहीं है तथा थोड़े ही से संतोष कर लेते हैं।

'खद्दर'—राज्य में सब जगह, कपड़ा जिसको 'रेजा' कहते हैं बुना जाता है, जिसको शहर के तथा कस्बों के कुछ लोगों को छोड़ कर सब पहिनते हैं।

सुनहरी रूपहरी छपाई, रंगाई तथा सलमे सतारे का काम—उदयपुर में, मोठड़ों व लहरियों की बंधाई, सलमा सितारे तथा कपड़ों पर सुनहरी और रुपहरी छपाई का काम बहुत उम्दा होता है यहां की छपाई एवं बंधाई भारतवर्ष में मशहूर है। कुछ कारीगर बाहर भी चले गये हैं।

मीनाकारी—नाथद्वारे में सोने चांदी पर मीने का काम होता है। उदयपुर में छुरे और तलवारों की मूंठों पर सुनहरी खुदाई का बढ़िया काम होता है।

खिलौने तथा लकड़ी पर रंगाई का काम—उदयपुर बसी और जहाजपुर में लकड़ी पर रंगाई का काम अच्छा होता है।

उदयपुर के बने हुये खिलौने भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं। छोटी सादड़ी में भी लकड़ी का काम होता है।

कांच की जड़ाई—दिवारों पर कांच की जड़ाई तथा रंगाई के काम के लिये उदयपुर के कारीगर बहुत प्रसिद्ध हैं। उत्तरी भारत में यहां के कारीगर बुलाये जाते हैं।

हथियार—उदयपुर में छुरे, पेशकब्ज, तलवारें, चाकू आदि अच्छे और उम्दा बनते हैं ।

आरणी और भींडर के चाकू व पेशकब्ज भी मशहूर हैं ।

चित्रकारी—नाथद्वारा और उदयपुर में चित्रकारी अच्छी होती है ।

कपड़ों पर काली और लाल छपाई—चित्तौड़गढ़ और आहाड़ में कपड़ों पर काले और लाल रंग की छपाई अच्छी होती है ।

कलई—भीलवाड़े में बर्तनों पर पक्की कलई का बहुत उम्दा काम होता है । यहां की कलई चमकीली तथा पायदार होती है । भारतवर्ष में ऐसी बढ़िया कलई और जगह नहीं होती । भरत याने ढलाई का काम भी भीलवाड़े में अच्छा होता है ।

काजलियां रंगाई—बेगूं और हमीरगढ़ के नानणे और पोमचे अच्छे होते हैं ।

इत्र—खमणोर में गुलाब का इत्र निकाला जाता है । यहां का इत्र भारत में प्रसिद्ध है ।

पत्थर के खिलौने तथा बर्तन—ऋषभदेवजी में कुछ लोग परेवा पत्थर के बर्तन तथा खिलौने बनाते हैं।

कम्बलें—देवगढ़ और आमेट में ऊनी कम्बलें अच्छी बनती हैं।

साबुन—उदयपुर तथा भींडर में कपड़े धोने का साबुन अच्छे परिमाण में बनता है।

कागज—घोसुंडा में कागज बनाने के कारखाने हैं। यहां सफेद रंग का मोटा कागज बनता है।

चूड़ियां—नारियल की चूड़ियां बड़े परिमाण में बनती हैं। उदयपुर में हाथी दांत की भी बनती हैं।

बर्तन आदि—सोने चांदी के जेवर तथा तांबा पीतल और लोहे के बर्तन राजधानी तथा अन्य कई कस्बों में बनते हैं।

उदयपुर की जेल में दरियें, कम्बलें, गलीचे आदि कई चीजें बनती हैं।

पेचघर तथा अन्य कारखानें—कपास की खासी पैदावार होने के कारण राज्य की ओर से नीची लिखी

जगहों में कपास लोढने तथा गांठें बांधने के लिये पेचघर खोले गये हैं:--

(१) भीलवाड़ा (२) गुलाबपुरा (३) कपासन (४) सादड़ी और (५) चित्तौड़गढ़। इन पेचों से तथा शहर में रेलवे, वर्कशॉप, बिजलीघर, छापाखाना, महकमा तामीरात आदि राज्य की ओर से कारखाने होने के कारण कुछ मजदूरों का इनसे निर्वाह होता है।

व्यापारी केन्द्रस्थान—उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, कपासन, फतहनगर, सनवाड़, भींडर, गुलाबपुरा, गोगुन्दा, सलुम्बर।

बाहर से आने वाली चीजें—कपड़ा, सोना, चांदी, नमक, शकर, मेवा, नारियल, तांबा पीतल की चद्दरें घासलेटतेल परचुनी सामान आदि।

मेवाड़ से बाहर जाने वाली चीजें—रुई, ऊन, तिल सरसों, घृत, शस्त्र, लकड़ी के खिलौने, मिट्टी के वर्तन, काली तम्बाखू, अफीम, कबाड़ा, खालें, सुनहरी तथा रुपहरी छपे हुये कपड़े, भेड़, गोंद, बकरे आदि बाहर जाते हैं।

रेलवे

बाहरी तथा भीतरी व्यापार को तरक्की देने के लिए राज्य में तीन रेलवे लाइनें हैं। ये तीनों छोटे नाप की हैं।

(१) राजपूताना मालवा रेलवे—यह रेलवे अजमेर से खारी नदी पार कर इस राज्य में करीब ८२ मील होती हुई मालवे की तरफ चली गई है। गुलाबपुरा से शम्भुपुरा तक के स्टेशन मेवाड़ राज्य में हैं।

(२) उदयपुर-चित्तौड़गढ़ रेलवे—यह रेल चित्तौड़गढ़ से पश्चिम, घोसुंडा, पांडोली, कपासन, करेड़ा, फतहनगर, मावली, भीमल, खेमली और देबारी होती हुई उदयपुर तक चली गई है। यह रेल महाराणा साहब की है। इसकी लंबाई ६६ मील है।

(३) मावली-मारवाड—यह रेलवे लाइन बन रही है किन्तु आमेट तक गाड़ी जाना शुरु होगया है। इसके स्टेशन ये हैं।

मावली, नाथद्वारारोड़, (मंडियाना) कांकड़ोली, कुंवारिया, सरदारगढ़, आमेट (चारभुजारोड़) देवगढ़

राज्य की प्रधान सड़कें

नाम सड़क	मील	किनारे के कस्बे और गांव
उदयपुर-चित्तौड़गढ़	७०	दरौली, भंवरासा, भटेवर, मंगलवाड़ भादौड़ा, बानीया, चित्तौड़गढ़
उदयपुर-निम्बाहेड़ा	७०	यह मंगलवाड़ से सीधी निम्बाहेड़ा गई है.
उदयपुर-खैरवाड़ा	५०	गोवर्धनविलास, वारापाल, टिडी (जावर) परसाद (चावण्ड ६ मील) ऋषभदेवजी खैरवाड़ा।
उदयपुर-जयसमुद्र	३२	समीना, कोटड़ा, केबड़ा, पलोदड़ा, जयसमुद्र
उदयपुर-कुम्भलगढ़	४०	गसार. इहवाल, कटार, कुम्भलगढ़ ।
उदयपुर-नाथद्वारा	३०	भवाणा, अम्बरेश्वर, एकलिंगजी, देलवाड़ा, नाथद्वारा ।
नाथद्वारा-मावली	१५	
नाथद्वारा से कांकरोली	१०	
कांकरोली-फतहनगर	१६	
उदयपुर से नाहरमगरा	१६	
उदयपुर-बड़ी का तालाब	५	
उदयपुर-उदयसागर	७	
उदयपुर-बेदला	३	
उदयपुर-आहड़	३	
नसीराबाद-नीमच	९२	राज्य में ९२ मील है। रायला, लाम्बिया भीलवाड़ा, हमीरगढ़, गंगराल, चित्तौड़गढ़, शम्भूपुरा, नीमच ।

डाक का प्रबन्ध

राज्य के कागज पत्र आदि पर्गनों में पहुंचाने के लिये राज्य की ओर से इन्तजाम है जिसको 'ब्राह्मणी' डाक कहते हैं। इस डाक से और लोगों की भी चिट्ठियां जा सकती हैं। अंग्रेजी डाकखानें नीचे लिखे स्थानों में हैं:—

उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, कपासन, जहाजपुर, खैरवाड़ा, नाथद्वारा, घोसुन्डा, कांकरोली, खेमली, कोटडा, सराडा, ऋषभदेवजी, लांबिया, सनवाड़, मांडल, मांडलगढ़, बदनोर, बनेड़ा, बानसी, बीगोद, बेगूं, बड़ी सादड़ी, छोटी सादड़ी, भादोड़ा, भींडर, देलवाड़ा, देवगढ़, गंगराल, हमीरगढ़, सलूम्बर, रायपुर, गुलाबपुरा, मावली, पारसोली, बसी।

शिक्षा विभाग

राज्य का यह विभाग डाईरेक्टर ऑफ पब्लिक इन्सट्रकशन मेवाड़ के अधीन है। राज्य की उच्च एवं प्राथमिक शिक्षा की देख रेख एवं प्रबन्ध इसी विभाग द्वारा होता है। उच्च शिक्षा के प्रबन्ध के लिए कॉलेज के प्रिन्सिपल

तथा अन्य स्कूलों की देख रेख के लिये इन्सपेक्टर ऑफ स्कूलस् रहते हैं। राज्य की ओर से सर्वत्र शिक्षा मुफ़्त दी जाती है। दिनोंदिन शिक्षा का प्रचार बढ़ रहा है।

राज्य की ओर से निम्न स्थानों में कालेज एवं पाठशालायें हैं।

महाराना कालेज—यह राजधानी उदयपुर में है, जहां अंग्रेजी में एफ. ए. तक की शिक्षा दी जाती है।

फतह-भूपाल संस्कृत विद्यालय—उदयपुर में है। संस्कृत में साहित्य और व्याकरण की मध्यमा तक की पढ़ाई होती है। साथ में कर्म कांड भी पढ़ाया जाता है।

अंग्रेजी मिडिल स्कूल— उदयपुर (२) भीलवाड़ा (३) चित्तौड़ (४) और खैरवाडे में हैं।

हिन्दी मिडिल स्कूल—(क) कपासन (ख) सादड़ी (ग) जहाजपुर (घ) सांगानेर (ङ) मांडल (च) और हुर्डा में हैं।

अंग्रेजी अपर प्राईमरी स्कूलस्—(१) माहोली (२) मांडलगढ़ (३) गुलाबपुरा (४) कनेरा (५) पुर (६) केलवाड़ा।

हिन्दी अपर प्राईमरी स्कूल—(१) ऊंठाला (२) आकोला (३) गलूंड (४) देवरिया (५) कुरज (६) रेलमगरा (७) रायपुर (८) सिंहपुर (९) राजनगर (१०) खमणोर (११) रींछेड़ (१२) गांवगुड़ा (१३) सायरा (१४) घोसुंडा (१५) कोटड़ी गढ़बोर (१७) धुलेव (१८) पलाणा (१९) सराड़ा ।

हिन्दी लोअर प्राईमरी स्कूल—(१) खेरोदा (२) ईन्टाली (३) घासा (४) नाई (५) नगावली (६) कानपुर (७) फतहनगर (८) लखावली (९) गुड़ली (१०) खेमली (११) मदार (१२) चंगेड़ी (१३) जावमा (१४) धमाणा (१५) राशमी (१६) लाखोला (१७) डिन्डोली (१८) दरीबा (१९) आरणी (२०) पोटला (२१) सहाड़ा (२२) खाखला (२३) आमली (२४) जड़ोल (२५) आगूंचा (२६) शंभूगढ़ (२७) मोतीपुर (२८) पडासोली (२९) रोपा (३०) इटून्दा (३१) शकरगढ (३२) पारोली (३३) पिपलूंद (३४) आकोला (३५) नंदराय (३६) बरूंदनी (३७) बिगोद (३८) मानपुरा (३९) गिलूंड (४०) कुवाखेड़ो (४१) आसींद (४२) धनेरिया (४३) सराड़ा (४४) बारापाल

(४५) जावर (४६) लसाड़िया (४७) कमोल (४८) नान्देशमा (४९) मजीरा (५०) कडूजा (५१) धोइन्दा (५२) मोलेरा (५३)

इमदादी स्कूल:—इन्हें राज्य की ओर से सहायता मिलती है:—(१) देवली (२) सरगांव (३) केलवाड़ा (४) इस्लामिया स्कूल, उदयपुर।

कन्या पाठशालायें:—(१) उदयपुर (२) भीलवाड़ा (३) चित्तौड़ (४) आसींद (५) जहाजपुर (६) मांडलगढ़ (७) कपासन (८) खैरवाड़ा (९) छोटी सादड़ी (१०) हुर्डा (११) राजनगर।

फतह स्मृति ब्रह्म छात्रालय—उदयपुर में राज्य की ओर से है। ब्राह्मण जाति के ब्रह्मचारी विद्यार्थी लिये जाते हैं। सशुल्क और निशुल्क दोनों प्रकार के छात्र दाखिल किये जाते हैं।

कृषि विद्यालय—किसान बालकों के लिए कृषि विद्या की शिक्षा के लिये शीघ्र ही उदयपुर में खोला जा रहा है।

भोपाल नोबल्स हाई स्कूल—उदयपुर में स्टेशन के पास है। यहां क्षत्रिय जागीरदारों के बालकों को अंग्रेजी

में मेट्रीक तक की शिक्षा दी जाती है। साथ में छात्रालय भी है।

सादड़ी और सरगांव में अच्छी संस्थायें हैं। छात्रावास भी दोनों जगह हैं।

चित्तौड़ गुरुकुल—चित्तौड़ में स्टेशन के पास ही आर्य समाज की ओर से स्थापित है। शिक्षा एवं व्यवस्था प्राचीन गुरुकुल पद्धति पर है।

विद्या-भवन—उदयपुर में फतहसागर के निकट बना हुआ है। मेट्रीक तक की पढ़ाई होती है। शिक्षा नवीन शैली पर देने का आयोजन है। साथ में संगीत, दस्तकारी और व्यायाम अनिवार्य रुप से है। विद्यार्थी को यहां दिन भर रहना पड़ता है। छात्रावास भी है।

जैन ज्ञान पाठशाला—व्यवहारिक शिक्षा के साथ जैन धर्म की शिक्षा दी जाती है। यह उदयपुर में है।

हरिश्चन्द्र आर्य विद्यालय—उदयपुर में सार्वजनिक अंग्रेजी अपर प्राइमरी स्कूल है।

दिगम्बर विद्यालय—उदयपुर में है। साथ में छात्रालय है।

भाषा

राज्य की मुख्य भाषा मेवाड़ी है जो हिन्दी का ही रूपान्तर है। राज्य के दक्षिण और पश्चिमी भाग में (बागड़ी) तथा पूर्वी (खैराड़) भाग में खैराड़ी बोली जाती है। बागड़ी का सम्बन्ध विशेष कर गुजराती से तथा खैराड़ी का सम्बन्ध 'हाडोती' से है। सारे राज्य में १०० में ६० मनुष्य मेवाड़ी बोलते हैं।

समाचार-पत्र

राज्य की ओर से सज्जन कीर्ति-सुधारक नामक साप्ताहिक पत्र प्रति सोमवार को प्रकाशित होता है। इसमें मेवाड़ गजट भी शामिल है।

मेडिकल डिपार्टमेंट

इसके बड़े अफसर 'स्टेट सर्जन' कहलाते हैं। इनके नीचे असिस्टेन्ट और सब-असिस्टेन्ट सर्जन रहते हैं। स्त्रियों की दवा के लिये उदयपुर में 'वाल्टर हास्पिटल' है जहां एक होशियार डाक्टरनी रहती हैं।

राज्य के नीचे लिखे स्थानों में अस्पताल हैं:-(१) उदयपुर में 'लैंसडाउन हास्पिटल' नाम का सरकारी बड़ा अस्पताल है जो सर्जन की निगरानी में है यहां और भी कई डाक्टर रहते हैं, (२) भीलवाड़ा (३) चित्तौड़गढ़ (४) जहाजपुर (५) मांडलगढ़ (६) सादड़ी (७) कपासन (८) ऊंठाला (९) रासमी (१०) सहाड़ा (११) गुलाबपुरा (१२) राजनगर (१३) ऋषभदेवजी (१४) सराड़ा ।

म्यूनिसिपैलिटी

शहर-सफाई, तन्दुरुस्ती, तामीरात इत्यादि के लिए राजधानी उदयपुर में म्यूनिसिपल बोर्ड कायम है । इसके मेम्बर राज्य की ओर से चुने जाते हैं ।

सिक्के

राज्य का खास सिक्का चित्तोड़ी है । इस पर एक ओर दोस्ति लंधन और दूसरी ओर 'चित्रकूट उदयपुर' और चित्तौड़गढ़ का दृश्य है । और चांदोड़ी भी चलता है ।

आय

राज्य की सालाना आमदनी ५० लाख से ऊपर है।

वर्षा

यह देश अरबी समुद्र और बंगाल की खाड़ी से जल लाने वाली दोनों वायु (मानसूनों) के रास्ते में होने के कारण तथा विशेष कर पहाड़ी होने से यहां समय पर वर्षा अच्छी होजाती है। ज्यादातर वर्षा अरबी समुद्र की जल लाने वाली वायु से ही होती है। कभी कभी बंगाल की खाड़ी की मानसून से भी हो जाया करती है।

राज्य के दक्षिणी भाग में घनी पहाड़ियां होने के कारण वर्षा बहुत होती है।

उदयपुर में वर्षा की औसत २५ इञ्च और पहाड़ी भाग में २६ से ३२ इञ्च तक की है।

आब-हवा-जलवायु

कुदरती बनावट के हिसाब से मेवाड़ के जो हिस्से किये गये हैं, उन हिस्सों की जलवायु एक दूसरे से भिन्न है। किन्तु वैसे राज्य की जलवायु साधरणतया अच्छी है।

पहाड़ी प्रदेश का पानी मैदानों के पानी से भारी है क्योंकि उसमें धातुएं और वनस्पति का अंश मिला रहता है।

राज्य में बहुत करके भूमि ऊंची होने के कारण सर्दी के दिनों में न तो अधिक सर्दी और गरमी के दिनों में न अधिक गर्मी पड़ती है।

खैराड़ की आब-हवा अच्छी है। इसी कारण वहां के निवासी दूसरे हिस्सों के रहने वालों से हट्टे कट्टे और सुडौल दीख पड़ते हैं।

राजधानी में गर्मी की औसत ७७° डिगरी है जनवरी से मई तक गर्मी ६१° से ८९° तक रहती है। वर्ष में सर्दी, गर्मी और वर्षा-तीन मौसम रहती है।

स्वास्थ्यप्रद स्थान—कुम्भलगढ़, गोगुन्दा, जयसमुद्र, चित्तौड़गढ़, इटून्दा।

जमीन और पैदावार

राज्य में जमीन कई किस्म की है। मोटे रूप से वह पांच भागों में बांटी जा सकती है।

(क) काली—यह बहुत उपजाऊ होती है। इसमें बरसात की तरी बहुत समय तक बनी रहती है।

(ख) भूरी—राज्य में यह विशेष कर है। यह प्रायः समथल और ढालू जगहों में मिलती है। यह काली से दूसरे नम्बर है।

(ग) रेतड़ी—प्रायः नदियों के किनारे होती है। यह हल्की होती है। उपजाऊपन के विचार से यह भूरी से नीचे है।

(घ) राती—इसकी पैदावर भूरी की तरह है।

(ङ) कंकरोटी—यह जमीन राती से हल्की है। मगारियों पर अकसर मिलती है।

राज्य के बीच में तथा दक्षिण में जमीन कई हिस्सों में बट गई है। कहीं कहीं काली जमीन के बड़े २ टुकड़े दीख पड़ते हैं तो कहीं कहीं बिरानी पथरीली जमीन पाई जाती है।

मेवाड़ में कई नदियां बहती हैं अतः नदियों के आस पास की सेजे की जमीन में अच्छी प्रकार खाद देने से ऐसी अच्छी हो जाती है कि उसमें कीमती फसलें बोई

जा सकती हैं। यही कारण है कि बड़े २ गांव व कस्बे नदियों के किनारे ही पाये जाते हैं।

राज्य में भूरी जमीन बहुतायत से मिलती है। चित्तौड़गढ़ और सादड़ी के जिलों की और उपरमाल की जमीन बहुतकर काली है। यह बहुत उपजाऊ जमीन है। इसमें रुई और अफीम की बहुत अच्छी पैदावार होती है। गेहूं और चने बिना सिंचाई के ही हो जाते हैं।

मांडलगढ़ और जहाजपुर के पूर्वी भागों में जमीन बहुत कम उपजाऊ है।

पहाड़ियों के पास रातड़ी तथा पथरीली जमीन पाई जाती है। पहाड़ी प्रदेश में भील लोग 'वल्लर' द्वारा खेती करते हैं। याने जंगलों को जला कर साफ करते हैं और फिर उनमें खेती करते हैं। राख का खाद देते हैं, गांव व कस्बे के आस पास की जमीन 'गोरमा' कहलाती है। यह प्रायः खाद आदि दिये जाने के कारण अच्छी हो जाती है।

गांव से बहुत दूर की जमीन आस पास में सिंचाई के साधन न रहने के कारण 'रांकड़' व 'कांकड़' में शुमार की जाती है।

पहाड़ों के ढालों में जहां हल नहीं चल सकते जमीन को खोद कर खेती की जाती है, जिसको यहां 'वालरा' कहते हैं।

राज्य की समथल भूमि राजपूताने की उत्तम उपजाऊ भूमियों में से है।

सहाडा, आसींद, हुर्डा, सादड़ी, कपासन और रासमी-राज्य में अच्छे उपजाऊ जिले हैं।

फसल

साल में सियालु (खरीफ) और उनालू (रबी) दोनों फसलें होती हैं। उनालू की फसल कुओं से तथा थोड़ी सी तालाबों से होती है।

साधारण लोगों के विचार से 'सियालु' की फसल मुख्य है, क्योंकि मामूली गृहस्थों और विशेष कर गरीबों का भोजन इसी फसल से मिलता है। यह फसल ज्यादा बोई जाती है, क्योंकि यह केवल वर्षा के पानी से ही हो जाती है।

जमीन की पैदावारी में मुख्य ये हैं:—

मक्की, रुई, तिल, उड़द, मूंग, गेहूं, चणा, जीरा, जव, धनिया, तम्बाखू, ईख और अफीम।

पैदावार इस परिमाण में होती है:—

नाम अनाज	उपज प्रति बीघा में	औसत पैदावार
मक्की	२० मण तक	६ मण
गेहूं	२२ ,, ,,	८ ,,
जव	२२ ,, ,,	८ ,,
जवार	१२ ,, ,,	
चणा	१७ ,, ,,	
कपास	६ ,, ,,	
अफीम	५ सेर तक	

मूंग, उड़द, सामा, मलिचा, काङ्गणी, कोदरा आदि की पैदावार औसत करीब ३ मण प्रति बीघा हो जाती है।

कपास—राज्य की चौरस जमीन में प्रायः करके बोई जाती है। यह राज्य की खासी उपज है। इसको

गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है और यह काली मिट्टी में अधिक होती है।

अफीम—राज्य में अफीम की खासी उपज होती थी, जिससे किसानों को बहुत लाभ होता था। अब इसका बोना बन्द है। मालवे के पास की भूमि में विशेष होती थी।

चांवल—इसके लिये जल की बड़ी आवश्यकता होती है और यह ऐसे खेतों में बोया जाता है जिनमें जल भर जाय। इसके पौदे को गर्मी की भी जरूरत होती है। यह मेवाड़ के पहाड़ी हिस्सों में जहां पानी भरा रहता है तथा कहीं २ तालाबों के पिछोर में भी होता है।

ईख—मेवाड़ में बहुतायत से निपजता है। इसके लिये अच्छे खाद और पानी की आवश्यकता है। सेरे-नले में कुंभलगढ़ जिले में पहिले बहुत बोया जाता था। मेवाड़ का गुड़ प्रसिद्ध है।

मक्की—मेवाड़ की खास फसल है। यह मेवाड़ में सर्वत्र होती है। अमीर और गरीब तीनों मौसम में खाते हैं। यह कई रूप में खाई जाती है।

गेहूं—इसको ठण्डे और सूखे जलवायु की आवश्यकता होती है। यह जरूरत माफिक काफी हो जाता है।

जौ और चणा—इनके लिये जल की बहुत आवश्यकता नहीं है। यह सब जगह बोया जाता है।

तम्बाखू—भीलवाड़ा जिला-पुर में काली तम्बाखू अच्छी होती है, और भी कहीं कहीं बो देते हैं।

सण—वर्षा में कहीं कहीं बोते हैं।

कसुंबा—भीलवाड़ा, मांडलगढ़ और जहाजपुर की भूमि में होता था।

मूंगफली—सादड़ी, जहाजपुर आदि जिलों में बोई जाती है।

फलदार वृक्षों में आम और सीताफल पहाड़ी प्रदेश में बहुत होता है।

शाक भाजी, जमींकन्द यत्र तत्र सब जगह और खास कर उदयपुर में खूब होता है।

भौगोलिक परिस्थिति का प्रभाव तथा वर्तमान सामाजिक दशा

ईश्वर की इस देश पर बड़ी ही कृपा है। यहां अच्छे अच्छे स्थान और जलवायु के सब लाभ मौजूद हैं। उत्तर को छोड कर देश चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है। इसके कारण देश शत्रुओं से बहुत कर बचा रहा है।

राज्य के बीच में चौरस भूमि आगई है । यह अच्छी उपजाऊ भूमि है । यह देश भारतवर्ष के दोनों मानसून-जल लाने वाली हवाओं के रास्ते में होने से वर्षा काफी अच्छी हो जाती है । जिससे राज्य में कई नादियें तथा झीलें हैं।

राज्य में खाने बहुत हैं जो राज्य का धन है ।

यहां की भूमि उपजाऊ और पानी बहुतायत से होने के कारण अन्न और कपड़े के लिये यहां के लोगों को दूसरों का मुख नहीं देखना पड़ता ।

यहां के लोग अपने देश को छोड़कर दूसरी जगह जाना भी पसंद नहीं करते इसका कारण भी यह है कि यहां खाने पहिनने के लिये चीजें मिलने में कठिनाई नहीं है ।

पहाड़ी देश होने के कारण यहां के लोग देश प्रेमी और निडर होते हैं ।

राज्य में जहां तहां बहुत ऐसी सुन्दर और अच्छी २ जगह हैं कि जिनको देखते ही आदमी आनन्द की लहरों में मस्त हो जाता है । यही कारण है कि यहां के लोग हमेशा आराम से रहने की बाहरी तड़क भड़क को झूंठी और बुरी समझ उससे सदा दूर रहे । इसी के बल पर

हमेशा अपनी और अपने देश की रक्षा करते हुए धर्म पर डटे रहे। इसका ऐसा इतिहास दुनियां में किसी दूसरे देश का नहीं है। यहां अनेक ऐसे वीर पुरुष और स्त्रियां हुई हैं जिन्होंने दुनिया के सामने बड़ी बहादुरी दिखाई है। हिन्दू-धर्म और जाति को बचाने के कारण इस देश का स्थान भारत के इतिहास में सब से ऊंचा है।

यहां के लोग राज-भक्त, धर्म को माननेवाले और सादगी पसन्द हैं। यहां के लोगों को छोटे से बड़े तक को अपने देश और अपने मालिक महाराणा साहब का गर्व रहता है।

अपने धर्म को मानना और दूसरे धर्म के माननेवालों से हिलमिल कर रहना, बैरी की भी विपत्ति में मदद करना, अपने रहन सहन को ठीक बनाये रखना, देश के लाभ में अपना लाभ समझना--ये बातें मेवाड़वालों में स्वाभाविक पाई जाती हैं।

राज्य में करीब ८ आठ हजार गांव और कस्बे हैं। शहर एक उदयपुर ही है, जिसकी आबादी करीब ४४०३५ है। १३ कस्बे ऐसे हैं जिनकी आबादी २ दो से ९ नौ हजार तक की है। भीलवाड़ा, नाथद्वारा और चित्तौड़गढ

ये तीनों राज्य में बड़े कस्बे हैं, इनकी आबादी आठ हजार से कुछ ऊपर है।

सारे राज्य की जन संख्या १५६६६१० है। हरएक वर्ग मील में औसत करीब १२५ मनुष्य राज्य में रहते हैं। कुल आबादी में करीब १५,१२,५६७ हिन्दू और ५३,८३३ मुसलमान हैं और बाकी ईसाई और दूसरी जातियों के लोग हैं।

सन् १६३१ की जो गणना हुई उसके हिसाब से ब्राह्मण धर्म को माननेवाले १३,५१,८७३ जैन ६६,००१ आर्य १४४ भील ६४,५४४ हैं, मुसलमान ५३,८३३ ईसाई ४७६ और सिख २३ हैं।

ब्राह्मण-धर्म के माननेवालों में शैव, वैष्णव, शाक्त हैं। जैन-धर्म में श्वेताम्बर और दिगम्बर दो बड़े भाग हैं। श्वेताम्बर में मूर्ति-पूजक और स्थानकवासी दो आम्नाय हैं।

मुसलमानों में सुन्नी और शिया नाम के दो भेद हैं। जिनमें सुन्नियों की संख्या अधिक है। शिया के माननेवालों में 'बोहरे' हैं, जिनकी संख्या करीब ६ हजार के हैं।

शहर तथा कस्बों के करीब एक लाख निवासियों को छोड़कर बाकी सारी प्रजा गावों में रहती है।

इस देश में कृषि ही बहुतायत से होती है। करीब ७० प्रति सैंकड़ा मनुष्यों का भोजन खेती से मिलता है। करीब २५ प्रति सैंकड़ा मनुष्य व्यापार और धन्धों में लगे हुए हैं। बाकी और २ पेशों के जरियों से तथा नौकरी आदि से अपना गुजर चलाते हैं। व्यापार करने वाली जातियों में मुख्य महाजन और बोहरे हैं। अधिकांश व्यापार बोहरों के हाथ में है।

ब्राह्मण लोग विशेष कर पाठ—पूजन तथा पुरोहिताई का काम करते हैं। कुछ व्यापार तथा नौकरी करते हैं। राजपूतों में कुछ जागीरदार हैं। बहुत करके फौजी नौकरी तथा खेती द्वारा अपना निर्वाह करते हैं।

लोग धनी नहीं हैं। पिछले जमाने में यह राज्य सैंकड़ों वर्षों तक अपने धर्म तथा देश को वैरियों से बचाने के लिये लड़ता रहा, इसी कारण से दूसरे राज्यों की तरह यहां के लोग रुपया जमा नहीं करसके। यहां के लोग बहुत करके थोड़े में ही सन्तोष कर लेते हैं और यहां से बाहर जाने तथा दूसरे काम जो कि उनके घर नहीं हुए हैं नहीं करते।

राज्य की ओर से यहां के किसानों को खेती के लिये अच्छे हक मिले हुए हैं। यहां रैयतवाड़ी कायदा है,

जिससे किसान सुखी हैं। सिचाई के लिये कई तालाब बनाये गये हैं तथा बनाये जारहे हैं। राज्य की ओर से नये ढङ्ग पर खेती कराने की भी कोशिश की जारही है; जिससे किसानों को बहुत लाभ होने की उम्मीद है। राज्य की ओर से कुए बनवाने तथा पशु या बीज खरीदने के लिये रुपया कर्ज दिया जाता है।

हिन्दुओं में जैनी विशेष धनी हैं। मुसलमानों में बोहरे व्यापार कुशल और धनी हैं।

शिक्षा की भी दिनों दिन बढ़ती होरही है। सारे राज्य में सन् १९३१ की जन संख्या के अनुसार करीब ४६४६१ पढ़े लिखे हैं, अंग्रेजी जानने वालों की संख्या करीब १६०९ के हैं। विधवाओं की संख्या करीब १,१७,७०२ हैं जो बहुत ही शोक जनक है। इसका मुख्य कारण बाल तथा वृद्ध विवाह की कुरीति है।

❀ परिशिष्ठ ❀

न्याय व शासन विभाग

राजधानी में न्याय के लिये मुन्सिफ कोर्ट और माजिस्ट्रेटी की अदालतें हैं। जिलों की अदालतों की और शहर

के मुन्सिफ कोर्ट और मजिस्ट्रेटी के फैसलों की अपील सेशन कोर्ट में होती है। राज्य में दो सेशन कोर्ट हैं:- (१) भीलवाड़े में और (२) शहर में। सेशन कोर्टों की अपीलें महद्राज सभा में, जो राज्य की सब से बड़ी अदालत-हाईकोर्ट है, होती है। इसके प्रेसीडेन्ट (सभापति) स्वयम् महाराणा साहब हैं। सभा में बड़े २ गण्यमान मेम्बर हैं। सभा के मेम्बरों के इजलास को, इज-लास 'मामूली' कहते हैं। संगीन और बड़े मुकद्दमे महाराणा साहब की मौजूदगी में फैसल किये जाते हैं। इसको 'इज-लास कामिल' कहते हैं। महद्राज सभा के मामूली इजलास के फैसले किये हुए सब मुकद्दमों के लिखित फैसले मंजूरी के लिये महाराणा साहब के पास पेश किये जाते हैं और उनकी मंजूरी हो जाने पर तामील कराई जाती है। न्याय विभाग के सिवाय सब माली और मुल्की काम 'महकमा खास' के अधीन है। महकमा खास के हाकिम प्रधान के स्थान पर समझे जाते हैं। दूसरे राज्यों के सम्बन्ध रखने वाली राज की कुल कारवाई इस महकमे से होती है।

मेवाड़ का राजवंश

यहां का राजवंश सूर्यवंशी है। यह वंश बड़ा माना जाता है, क्योंकि इसमें भगवान् ऋषभदेव, रामचंद्र, बुद्धदेव आदि बड़े २ महान् पुरुष पैदा हुए हैं।

उदयपुर का राजवंश सूर्यवंशियों में सब से ऊंचा है, क्योंकि यह मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्रजी के बड़े पुत्र कुश के वंश में माना जाता है।

इस वंश में 'गुहिल' नाम के प्रतापी राजा होने के कारण इस वंश का नाम गुहिल वंश कहलाया। इस वंश के लोग गहलोत के नाम से मशहूर है। इस वंश की एक शाखा 'सीसोदा' गांव में रही, इस कारण से 'सीसोदिया' कहलाते हैं।

इस वंश की भारतवर्ष में उदयपुर, नैपाल, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, धर्मपुर, भावनगर, पालीताणा आदि कई रियासतें हैं।

रा० ब० पं० गौरीशंकरजी कृत राजस्थान के इतिहास से अधिकांश लिया गया।